mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-28 अंक-318 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

19 नवंबर 2024 मंगलवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

भारतीय बॉक्सर ने...

@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

कैलाश गहलोत भाजपा में शामिल

कहा- ईडी-सीबीआई के दबाव में 'आप' नहीं छोड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी (आप) और दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री पद से इस्तीफा देने के 24 घंटे बाद कैलाश गहलोत सोमवार को भाजपा में शामिल हो गए। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई। इस दौरान केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर भी मौजूद थे। भाजपा में शामिल होने के बाद कैलाश गहलोत ने कहा- लोग सोचते होंगे कि रातों-रात ये फैसला ले लिया। किसी के दबाव में आकर फैसला लिया, लेकिन मैं बता दूं कि मैंने जीवन में कभी दबाव में कोई काम नहीं किया है।

गुजरात के मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस छात्र की रैगिंग, मौत

- 15 पर एफआईआर, कॉलेज से सस्पेंड

गुजरात (एजेंसी)। गुजरात में पाटन जिले के जीएमईआरएस मेडिकल कॉलेज में फर्स्ट ईयर के एमबीबीएस छात्र की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, मृत छात्र समेत अन्य जूनियर छात्रों की सीनियर्स ने रैगिंग की थी। इस दौरान सीनियर स्टूडेंट्स ने छात्र को 3 घंटे तक खड़ा रखा, जिसके बाद वह बेहोश हो गया। इलाज के लिए उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसकी मौत हो गई। घटना 16 नवंबर की है।

राहुल गांधी ने 'एक हैं तो सेफ हैं' का पोस्टर दिखाया

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की वोटिंग से 2 दिन पहले कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने मुंबई में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इसमें उन्होंने मुंबई के धारावी के रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट को लेकर भाजपा

सरकार की नीति की आलोचना की। उन्होंने एक तिजोरी से 2 पोस्टर निकाले। एक पोस्टर में 'एक हैं तो सेफ हैं' लिखा था। दूसरे पोस्टर में धारावी की तस्वीर लगाई थी।

शिमला के हाटकोटी मंदिर में है अनोखा कलश

जंजीरों से नहीं बांधा तो भागने लगता है ये

शिमला (एजेंसी)। बात अगर भारत के हिल स्टेशन की हो, तो शिमला का नाम सबसे पहले आता है। यह शहर खूबसूरत वादियों, पहाड़ और शानदार मौसम के लिए जाना जाता है। शिमला की कई जगह पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। लेकिन यहां एक ऐसा मंदिर भी है, जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं।

शिमला से 130 किमी दूर हाटेश्वरी माता का मंदिर है। यह मंदिर हिमाचल प्रदेश के पब्बर नदी के किनारे बसा एक प्राचीन गांव है। यह मंदिर बहुत प्रसिद्ध है और दूर दूर से लोग यहां माता के दर्शन के लिए आते हैं। इस मंदिर में एक ऐसा चमत्कार है, जिसे देखने वाला हैरान रह जाता है। आइए जानते हैं कि शिमला के हाटकोटी मंदिर के बारे में।

महाभारत काल से जुड़ा है इतिहास- जानकारी के अनुसार, इस मंदिर का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। यहां मंदिर परिसर में 5 मठ बने हुए हैं, जिनमें शिव की प्रतिमाएं उकेरी गई हैं। कहते हैं कि ये मठ पांडवों द्वारा बनवाए गए थे। इन्हें लोग पांडवों का घर या पांडवों के खिलौने का घर कहते हैं। किवदंती के अनुसार, यहीं पर बैठकर पांडव माता रानी की पूजा किया करते थे।

मंदिर में चमत्कारी घड़ा

जब भी आप इस मंदिर में आएं, तो आपको एक बड़े आकार का तांबे का घड़ा दिखाई देगा। यह घड़ा काफी पुराना है। कहते हैं कि जब भी पब्बर नदी का जलस्तर बढ़ जाता है, तो यह घड़ा भागने लगता है, इसलिए इसे जंजीरों से बांधकर रखा जाता है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह जंजीरें माता रानी के पैरों के नीचे दबी हुई हैं।

7वीं शताब्दी की है माता की मूर्ति

मंदिर के गर्भगृह में रखी हाटेश्वरी माता की मूर्ति देखने योग्य है, जो महिषासुर का वध कर रही है। यह मूर्ति 7वीं शताब्दी की है। इसकी ऊंचाई 1.2 मीटर है। मूर्ति के 8 हाथ हैं। माता अपने बाएं हाथ में महिषासुर का सिर पकड़े हुई हैं। कहते हैं की माता का दाहिना पैर भूमिगत है। मरने के एक हाथ में चक्र और दूसरे में रक्तबीज है।

प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट सख्त, कहा -

हमसे पूछे बिना प्रतिबंध न हटाएं, हालात गंभीर

- दिल्ली-एनसीआर में सभी स्कूल बंद करने के निर्देश
- प्रदूषण का स्तर खतरनाक कैटेगरी में रिकॉर्ड
- दिल्ली में एक्यूआई - 495 पहुंचा, यह सीजन में सबसे बदतर

कई फ्लाइट्स 1 घंटे तक लेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिल्ली-एनसीआर रीजन में सरकारों को निर्देश दिया है कि प्रदूषण की गंभीर स्थिति देखते हुए 12वीं तक के स्कूल बंद करने पर फैसला लें।

एक्यूआई का स्तर नीचे लाने के लिए ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान (ग्रेप स्टेज 3 और स्टेज 4 के सभी जरूरी प्रतिबंधों को लागू किया जाए।

सुप्रीम कोर्ट के राज्य सरकारों को 5 निर्देश

- सभी राज्य सरकारें स्टेज 4 के प्रतिबंध तुरंत लगाएं और इनका सख्ती से पालन किया जाए।
- सभी राज्यों में एक टीम बनाई जाए जो स्टेज 4 के लागू होने पर नजर रखे।
- अगर किसी प्रतिबंध का उल्लंघन किया जाता है, तो ऐसे केस सुलझाने के लिए मैकेनिज्म बनाया जाए।
- जब तक हम अगला आदेश नहीं देते, तब तक स्टेज 4 ग्रेप लागू रहना चाहिए, भले एक्यूआई 450 से नीचे आ जाए।
- 10वीं और 12वीं की क्लास अभी भी लग रही है, एनसीआर में शामिल राज्य सरकारें तुरंत स्कूल बंद करने पर फैसला लें।

एक्यूआई 400 के पार पहुंचने पर ग्रेप लगाया जाता है

हवा के प्रदूषण स्तर की जांच करने के लिए इसे 4 कैटेगरी में बांटा गया है। हर स्तर के लिए पैमाने और उपाय तय हैं। इसे ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान (ग्रेप) कहते हैं। इसकी 4 कैटेगरी के तहत सरकार पाबंदियां लगाती है। और प्रदूषण कम करने के उपाय जारी करती है।

जी20 मीटिंग में शामिल होने पीएम मोदी ब्राजील पहुंचे

संस्कृत मंत्रों से स्वागत हुआ, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से हो सकती है मुलाकात

रियो डि जेनेरियो (एजेंसी)। ब्राजील में सोमवार से 19वीं जी20 समिट शुरु हो गई। इसमें शामिल होने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रियो डि जेनेरियो पहुंच चुके थे। यहां भारतीय समुदाय के लोगों ने संस्कृत मंत्रों से उनका स्वागत किया। समिट दो दिन 18 और 19 नवंबर तक चलेगी। इस इकोनॉमिक संगठन में 19 देश और 2 संगठन (यूरोपियन यूनियन और अफ्रीकन यूनियन) शामिल हैं। पिछली बार जी20 समिट का आयोजन भारत में हुआ था।

इससे पहले मोदी दो दिन के लिए नाइजीरिया दौरे पर थे। वहां उन्हें सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान 'द ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर' से नवाजा गया। मोदी, ब्राजील के बाद गुयाना का दौरा करेंगे।

खड़गे बोले- भाजपा और आरएसएस जहर की तरह

- ऐसे जहरीले सांपों को मार देना चाहिए, भाजपा बोली- यह भड़काऊ भाषण, ईसी एक्शन ले

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने रविवार को भाजपा और आरएसएस की तुलना जहरीले सांप से की है। उन्होंने सांगली में चुनाव प्रचार के दौरान कहा- अगर भारत में राजनीतिक रूप से सबसे ज्यादा खतरनाक कोई चीज है तो वो है भाजपा और आरएसएस। वे जहर की तरह हैं।

रामलला का तिलकोत्सव

जनकपुरी से 500 मेहमान गिफ्ट लाए

- अयोध्या में महिलाएं गीत गा रहीं, मां सीता के छोटे भाई चढ़ा रहे थे तिलक

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में प्रभु श्रीराम को तिलकोत्सव चढ़ाया जा रहा है। 500 से ज्यादा जनकपुर के मेहमान अयोध्या पहुंचे हैं। वह 501 प्रकार का नेग लाए हैं। सीता जी की सखियां, जिन्हें 'तिलकहरू' कहा जाता है, अयोध्या में प्रभु राम के

तिलक के लिए विशेष नेग लेकर पहुंची हैं। श्री रामजी का तिलक सीताजी के छोटे भाई की भूमिका में आए जानकी मंदिर जनकपुर के छोटे महंत राम रोशन दास चढ़ाएंगे। रामसेवकपुरम में वेदज्ञ आचार्यों के मंत्रोच्चार के बीच तिलक चढ़ाया जाएगा। अयोध्या की महिलाओं की टोली अवध क्षेत्र के लोक गीत गा रही हैं।

महाराष्ट्र और झारखंड में थमा चुनाव प्रचार, 20 नवंबर को डाले जाएंगे वोट

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र और झारखंड में सोमवार शाम से चुनावी शोर समाप्त हो गया है। अब महाराष्ट्र की सभी विधानसभा सीटों और झारखंड के दूसरे चरण की सीटों के लिए बुधवार, 20 नवंबर को वोट डाले जाएंगे। वहीं दोनों राज्यों की सभी सीटों के लिए मतों की गणना 23 नवंबर को होगी। दोनों राज्यों में सभी दलों ने मतदाताओं को लुभाने के लिए पूरी ताकत झोंकी है। अब देखना होगा कि जनादेश किसके पक्ष में आता है।

मणिपुर, सुरक्षाबलों की गोली से एक प्रदर्शनकारी की मौत

2 दिन स्कूल बंद, केंद्र सरकार का सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्स की 50 कंपनियां भेजने का फैसला

नई दिल्ली/इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में शनिवार रात भड़की हिंसा के बाद स्थिति अभी भी तनावपूर्ण बनी हुई है। जिरिबाम जिले में रविवार को एक मैतेई प्रदर्शनकारी की पुलिस की गोली से मौत हो गई थी। इसके बाद हालात और खराब हो गए हैं।

इसे देखते हुए राज्य के स्कूलों में में 2 दिन के लिए छुट्टी कर दी गई है। गृह मंत्री अमित शाह सोमवार को राज्य के सुरक्षा हालात का रिव्यू किया नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी मणिपुर हिंसा से जुड़े 3 मामलों की जांच करेगी। केंद्र सरकार ने हालात पर काबू पाने के लिए सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्स की 50 कंपनियां (5 हजार जवान) मणिपुर भेजने का फैसला लिया है।

खड़गे बोले- मणिपुर के लोग मोदी को माफ नहीं करेंगे

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि भाजपा चाहती है कि मणिपुर जले। वह नफरत और बांटने वाली राजनीति कर रही है। 7 नवंबर से अब तक राज्य में 17 लोगों की जान जा चुकी है। कई अन्य जिलों में हिंसा भड़क रही है। मणिपुर के मामले में आप (पीएम मोदी) फेल रहे। अगर कभी भविष्य में आप मणिपुर गए तो वहां के लोग कभी आपको माफ नहीं करेंगे। वे कभी ये नहीं भूलेंगे कि आपने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया।

कश्मीर और लद्दाख में बर्फबारी

बिहार में कोहरे के कारण 17 ट्रेनें, 6 फ्लाइट लेट,म.प्र. में स्कूलों की टाइमिंग बदली

नई दिल्ली/भोपाल/पटना/श्रीनगर (एजेंसी)। देश में ठंड के साथ-साथ कोहरे का असर भी लगातार बढ़ते जा रहा है। बिहार में कोहरे के कारण विजिबिलिटी घटने से 17 ट्रेनें लेट हो गईं। 6 विमानों के टेकऑफ और लैंडिंग में भी देरी हुई।मध्य प्रदेश में भी सर्द हवा चलने का दौर लगातार जारी है। अब स्कूलों की टाइमिंग भी बदली जा रही है। कश्मीर और लद्दाख में बर्फबारी के चलते मौसम सुहावना हो गया। पर्यटक बर्फबारी का लुत्फ उठा रहे थे।

डांस करते-करते दूल्हे को आया हार्टअटैक

- शादी से एक दिन पहले युवक की मौत से पसरा मातम

हाथरस (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के जिले हाथरस में शादी के ठीक एक दिन पहले डांस करते समय दूल्हे की हार्ट अटैक आने से मौत हो गई। परिजन उसे तत्काल जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने जांच करते ही युवक को मृत घोषित कर दिया। परिजनों को डॉक्टर की बात पर विश्वास नहीं हुआ तो निजी अस्पताल लेकर पहुंचे लेकिन यहां भी प्राथमिक चेकअप के बाद युवक मृत घोषित कर दिया गया।

लगवा दीजिये बोर्ड, गंगाजल पीने-नहाने लायक नहीं...

- वाराणसी डीएम को एनजीटी ने लगाई फटकार

वाराणसी (एजेंसी)। गंगा की सहायक नदी असी और वरुणा पर अतिक्रमण को लेकर एनजीटी ने आज बेहद तल्ख टिप्पणी की। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल में असि और वरुणा पर हुए अतिक्रमण के मामले पर सुनवाई करते हुए जिला अधिकारी वाराणसी को कहा कि क्यों न आप बोर्ड लगवा दें कि गंगा जल नहाने और पीने योग्य नहीं है। वरुणा और असि के अतिक्रमण पर कार्यवाही की सुनवाई

करते हुए एनजीटी के जजों ने जिला अधिकारी को यहां तक कहा कि आप ऐसा नहीं कह सकते कि शासन की तरफ देखना पड़ता है। आप स्वयं में इतने ताकतवर हैं।

आप गंगा का पानी पी सकते है?

दरअसल कोर्ट में वरुणा और असि नदी के ग्रीन बेल्ट में हुए अतिक्रमण की कार्यवाही को लेकर सुनवाई हो रही थी। याचिकाकर्ता के वकील सौरभ तिवारी ने बताया कि वरुणा और असि पर अतिक्रमण और प्रदूषण को लेकर सुनवाई हुई। ऑनलाइन सुनवाई में जिला अधिकारी वाराणसी भी मौजूद थे। इस सुनवाई के दौरान एनजीटी के जज अरुण कुमार त्यागी और सब्जेक्ट एक्सपर्ट के जज के तौर पर ए सेंथिल सुनवाई कर रहे थे। वरुणा और असि नदी के अतिक्रमण पर कार्यवाही को लेकर जिला अधिकारी जवाब दे रहे थे।

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में हाथी मानव द्वंद प्रबंधन पर कार्यशाला

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उमरिया जिले के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में हाथी मानव द्वंद प्रबंधन पर रविवार को कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वन्यजीवों की सुरक्षा मुख्य रूप से हाथी मानव द्वंद प्रबंधन विषय पर विशेषज्ञों द्वारा बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के अधिकारी-कर्मचारियों को जानकारी दी गई। कार्यशाला में ट्रंक कॉल एनजीओ मुंबई के व्याख्याता श्री आनंद शिंदे, प्रकृति फाउंडेशन के श्री पुष्पेन्द्र द्विवेदी, वन विभाग के फील्ड डारेक्टर, उप संचालक, रेंज ऑफिसर मगधी और वनरक्षक ने वन्यजीव संरक्षण और हाथी मानव द्वंद प्रबंधन विषय पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला का आयोजन मानपुर परिक्षेत्र द्वारा किया गया। कार्यशाला में वन विभाग के अधिकारी-कर्मचारी, हाथी मित्र और ग्राम लोग उर्दाना, छपड़ोड, देवरी, बलहोड, माला, मचखेता, मढौ, गुरुवाही, डोभा, नेवसी, समरकोइनी के ग्रामीण उपस्थित रहे।

ऊर्जा मंत्री तोमर ने दी जानकारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने प्रदेश के बिजली कर्मियों के लिए बड़ी घोषणा करते हुए कहा है कि कहा कि प्रदेश के विद्युत कर्मियों के लिए एक नई शुरुआत मध्य प्रदेश पावर कंपनी- कैशलेस स्वास्थ्य योजना के रूप में की जा रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में बनाई गई यह योजना विद्युत कंपनियों के नियमित, संविदा एवं रिटायर्ड कर्मियों और उनके परिवार के सदस्यों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार की दिशा में एक बड़ा कदम है। अब सभी लाभार्थी 5 से 25 लाख तक की कैशलेस स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे। इस योजना से लगभग 90,000 परिवार लाभान्वित होंगे। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा है कि प्रदेश की जनता को 24म7 निर्बाध विद्युत उपलब्ध कराने वाले सभी विद्युत कर्मियों के लिए बड़ी सौगात है। उन्होंने कहा है कि विभिन्न विद्युत कर्मचारी संगठनों द्वारा लगातार इस योजना की मांग की जा रही थी। यह बीमा योजना अंशदायी और वैकल्पिक है। योजना में निर्धारित अवधि में नामांकन करना होगा। योजना में तीन फैमिली फ्लोटर विकल्प हैं। विकल्प एक में प्रतिवर्ष 5 लाख रुपए तक के बीमा कवरेज के लिए 500 रुपये प्रति माह, 10 लाख रुपए तक के बीमा के लिए 1000 और 25 लाख रुपए तक के बीमा के लिए 2000 रुपये प्रति माह देना होगा। विद्युत कर्मी इसमें से किसी भी विकल्प का चयन कर सकते हैं । स्वास्थ्य के लिए वर्तमान में लागू व्यवस्था भी जारी रहेगी।

खिलाड़ी कभी हारता नहीं है या तो जीतता है या सीखता है : खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा है कि सुरखी विधानसभा क्षेत्र में युवाओं के लिए स्टेडियम, जिम जैसी सुविधाएं उपलब्ध हो चुकी हैं। हमारे युवाओं के लिए हर सुविधा उपलब्ध है, इसलिए सभी युवा अपने शरीर पर और अपने खेल पर ध्यान दें। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने सागर जिले की सुरखी विधानसभा क्षेत्र के राहतगढ़ में आयोजित पार्षद क्रिकेट कप के फाइनल मुकाबले में खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि इस टूर्नामेंट में सभी खिलाड़ी विजेता है, क्योंकि खिलाड़ी कभी हारता नहीं है। खिलाड़ी या तो वह जीतता है या तो सीखता है, इसलिए जो कमियां रही हो खिलाड़ी उन्हें पूरा करने का प्रयास करें और अगली बार फिर पूरी तैयारी के साथ मैदान पर जीत के इरादों के साथ उतरे। मंत्री श्री राजपूत ने प्रतियोगिता में शामिल विजेता तथा उपविजेता एवं टूर्नामेंट में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। पार्षद क्रिकेट कप का आयोजन 4 नवंबर से किया गया था। इसमें 16 टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में चार-चार मैच खेले गए । रविवार को इस टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला खेला गया, जिसमें सानू-11 टीम विजेता रही तथा उप विजेता टीम अली-11 रही। इस दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कार्यों की समीक्षा में दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री नीरज मंडलोई ने सोमवार को मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने सकल तकनीकी एवं वाणिज्यिक हानियों को कम करने के साथ ही राजस्व संग्रहण बढ़ाने के उपायों को अमल में लाते हुए बिजली चोरी पर प्रभावी अंकुश लगाने पर जोर दिया। एसीएस ऊर्जा श्री मंडलोई ने कहा कि प्रदेश में सभी श्रेणी के बिजली उपभोक्ताओं को व्यवधान रहित और गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के साथ ही उपभोक्ता सुविधाएं प्रदान करना राज्य शासन की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित करें कि अंतिम छोर के विद्युत उपभोक्ता तक पर्याप्त वोल्टेज पर निर्बाध विद्युत आपूर्ति हो। एसीएस श्री मंडलोई ने कंपनी कार्यक्षेत्र में सभी श्रेणी के विद्युत उपभोक्ताओं को की जा रही विद्युत आपूर्ति की समीक्षा के साथ ही कंपनी अंतर्गत विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत चल रहे निर्माण कार्यों की प्रगति की जानकारी ली और जरूरी निर्देश दिये।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने सेना को सम्मानित किया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने मध्यप्रदेश के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत, बचाव के वीरतापूर्ण साहसी प्रयासों के लिए सेना की 97 फील्ड रेजिमेंट को यूनिट साइटेशन पुरस्कार प्रदान किया। राज्यपाल श्री पटेल ने राजभवन में आयोजित गरिमामय समारोह में सेवा परमो धर्म के आदर्श वाक्य के प्रति सेना की प्रतिबद्धता को स्थापित करने में 97 फील्ड रेजिमेंट के योगदान की सराहना की। इकाई के कमान अधिकारी कर्नल देवमाल्या मुखर्जी और सूबेदार मेजर देवेन्द्र कुमार को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने 97 फील्ड रेजिमेंट की यूनिट के दतिया और ग्वालियर जिलों में बाढ़ राहत और बचाव कार्यों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए राज्यपाल का प्रशस्ति पत्र प्रदान किया है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश के दतिया और ग्वालियर जिलों में बाढ़ राहत कार्यों में 97 फील्ड रेजीमेन्ट ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। रेजिमेंट ने नदी की तेज़ धाराओं को पार करते हुए साहसिक रात्रि ऑपरेशन किए। काली सिंध, पार्वती और नौन नदियों में डूबे घरों में फंसे नागरिकों को बचाने के लिए अभियान चलाया। इस दौरान 70 से अधिक नागरिकों को सुरक्षित रूप से बचाया। महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों सहित 100 नागरिकों को स्थानांतरित किया।

बचाव दल ने तीन दिनों की अवधि के दौरान, संसाधनों के कुशल आवंटन और अथक कार्यों से नुन्हारी, इंदरगढ़ और पवाया गांवों के ग्रामीणों को बचाने में सफलता प्राप्त की। इसी तरह झील के टूटने और पानी के उफान पर होने के बावजूद, संकट ग्रस्त दतिया की अमन कॉलोनी के निवासियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। सेना की 97 फील्ड रेजिमेंट यूनिट के जवानों ने लोगों की जान बचाने के साथ ही आपदा से तबाह हुए लोगों में उम्मीद की किरण भी जगाई। यूनिट की सफलता ने आपदा राहत कार्यों में सेना की महत्वपूर्ण भूमिका की एक शक्तिशाली मिसाल बनाई है।

संभाग आयुक्त ने सीएम हेल्पलाइन शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निराकरण के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संभाग आयुक्त श्री संजीव सिंह ने आज समीक्षा बैठक आयोजित कर सीएम हेल्पलाइन में लंबित शिकायतों की गहन समीक्षा की। उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों का समाधान त्वरित और गुणवत्ता पूर्ण तरीके से सुनिश्चित किया जाए। बैठक में संभाग के विभिन्न विभागों की योजनाओं की प्रगति का भी जायजा लिया गया। संभाग आयुक्त श्री सिंह ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी पात्र हितग्राहियों तक पहुंचे। उन्होंने योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और प्रभावशीलता पर जोर देते हुए कहा कि जनहित के कार्यों का निराकरण समय-सीमा में किया जाए।

परासी में मौजूद फायबर पशुओं को अत्यंत प्रिय

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। धान, गेंहू मक्का सहित अन्य खाद्य फसलों की कटाई के बाद शेष बचा हिस्सा पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता रहा है। क्योंकि खेतों में अवशेष के रूप में इस हिस्से में किसान आग लगा देता है और इससे इंसानी बस्तियों, परिवेश और वातावरण प्रदूषित होता जाता है। हाल ही में कृषि अभियांत्रिकी विभाग भोपाल द्वारा नरवाई जलाने की घटनाओं का सेटेलाइट डेटा जारी किया गया है। इसमें मध्यप्रदेश में 15 सितंबर से 14 नवम्बर के बीच कुल 8917 घटनाएं दर्ज की गई हैं। गत बीते 3 दिनों की बात करें, तो बालाघाट में 15 नवम्बर को नरवाई जलाने की सिर्फ एक घटना दर्ज हुई है। वहीं, श्योपुर में 489, जबलपुर में 275 घटनाएं हुई है। इसी तरह ग्वालियर, नर्मदापुरम्, सतना, दतिया जैसे जिलों में इस तरह की करीब 150 घटनायें रिकार्ड हुई है। यह डेटा इस वर्ष का पूरे देश मे सबसे अधिक है। यह पंजाब व हरियाणा जैसे कृषि में अग्रणी प्रदेशो से भी अधिक है। मध्यप्रदेश में नरवाई जलाने की घटनाएं सबसे कम मात्रा में दर्ज हुई हैं। बालाघाट जिले में कृषि की परम्परागत शैली से ऐसी घटनाएं बिल्कुल नगण्य सी है। जिले के उप संचालक कृषि श्री राजेश खोब्रागड़े बताते हैं कि बालाघाट में नरवाई (पराली) जलाने के मामले में यहां के किसान बेहद सजग हैं। यहां किसान धान का उपयोग तो अपने लिए करते ही है, जबकि धान कटाई के बाद शेष बचे हिस्से (खूंट या खूंटी) को पशुओं के भोजन के रूप में खेतों में ही रहने देते हैं और कुछ हिस्सा काटकर पशुओं के लिए पुंजनी या पुंजना या कहें रोल बनाकर सुरक्षित रख लेते हैं। यहां परम्परागत रूप से खेती-किसानी का प्रबंधन बेहतर स्वरूप से दिखाई देता है। जिले में 15 सितंबर से 16 नवम्बर तक 6 घटनाएं पराली जलने की रिकॉर्ड हुई है। जिले में किसान हार्वेस्टर से कटाई के बावजूद एक फीट तक धान काटता है और रियर से कटाई करने पर भी कुछ हिस्सा शेष रखते है। यहां किसान धान का शेष भाग मुख्य रूप से पशुओं के लिए संरक्षित करते हैं और पूरे साल भर इसे पशुओं के चारे के रूप में उपयोग में लाते हैं। बालाघाट जिले में खरीफ की फसल में मुख्य रूप से धान का रकबा अधिक है। यहां इस वर्ष 2 लाख 60 हजार हेक्टेयर में धान उगाई गई।

सरस्वती शिशु मंदिर में शिक्षा के साथ संस्कार भी दिए जाते हैं-मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सरस्वती शिशु मंदिर ऐसा शिक्षण संस्थान है जहां बच्चों को सुबह उठने से लेकर रात के सोने तक के मंत्र सिखाए जाते हैं, जो बच्चों के जीवन में अनुशासन और संस्कार की नींव डालते हैं। सरस्वती शिशु मंदिर में बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार भी दिए जाते हैं । यह बात खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने सागर जिले के राहतगढ़ के सरस्वती शिशु मंदिर में आयोजित वार्षिक उत्सव में कही। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर सामाजिक शिक्षण संस्थान है, जहां बच्चों के लिए शिक्षा के साथ राष्ट्रभक्त, समाज के प्रति उनका दायित्व, वैदिक मंत्र उच्चारण तथा अनुशासन सहित शारीरिक आधुनिक तकनीकी शिक्षा दी जाती है। वार्षिक उत्सव में भी बच्चों द्वारा जो सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए उनमें भी समाज के लिए संदेश है। ऐसे शिक्षण संस्थान में पढ़ने वाले बच्चे देश में रहें चाहे विदेश में

रहें, अपने माता-पिता अपने क्षेत्र तथा स्कूल का नाम रोशन करते हैं। मंत्री श्री राजपूत ने सरस्वती शिशु मंदिर परिवार तथा कार्यक्रम में पधारे बच्चों के अभिभावक तथा क्षेत्र वासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

मंत्री श्री राजपूत ने सरस्वती शिशु मंदिर प्रबंधन की मांग पर 25 लाख के ऑडिटोरियम निर्माण की घोषणा की। उन्होंने कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर के लिए मैं हमेशा से ही समर्पित रहा हूं, क्योंकि मेरे बच्चे भी शुरुआती दौर में सरस्वती शिशु मंदिर में ही पढ़े हैं। जो भी आवश्यकता सरस्वती शिशु मंदिर के लिए होगी उसके लिए मैं हमेशा आपके सहयोग के लिए तैयार रहूंगा। क्योंकि सरस्वती शिशु मंदिर परिवार तपस्या करके देश का भविष्य बना रहा है।

पेंच टाइगर रिजर्व में बाघ शावक मृत पाया गया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। फील्ड डारेक्टर पेंच टाइगर रिजर्व सिवनी श्री देवा प्रसाद जे. ने बताया कि अरी बफर रेंज के कैम्प क्रमांक 188 में गश्त के दौरान कर्मचारियों को एक बाघ शावक मृत मिला। बाघ शावक के शरीर के सभी अंग सुरक्षित हैं। मृत शावक की उम्र लगभग 4 माह है। उन्होंने बताया कि सबूतों का पता लगाने के लिये कर्मचारियों और डॉग स्क्वायड द्वारा इलाके की सघन तलाशी ली जा रही है। फील्ड डारेक्टर श्री देवा प्रसाद जे. ने बताया कि बाघ शावक का पोस्ट-मार्टम एनटीसीए प्रोटोकाल के अनुसार किया जायेगा। मृत शावक के अंग नमूने हिस्टोपैथोलॉजिकल और फोरेंसिक परीक्षण के लिये भेजे जा रहे है। पीएम की रिपोर्ट आने के बाद वस्तु स्थिति की सही जानकारी प्राप्त होगी। प्रकरण की गहन विवेचना की जा रही है।

कलेक्टर ने समय-सीमा बैठक में दिए त्वरित और गुणवत्तापूर्ण शिकायत निराकरण के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कलेक्टर श्री कौशलेंद्र सिंह की अध्यक्षता में समय-सीमा पत्रों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक में सीएम हेल्पलाइन पर प्राप्त शिकायतों और समय-सीमा में प्राप्त पत्रों की समीक्षा कर उनके त्वरित और गुणवत्तापूर्ण निराकरण के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सिंह ने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसी भी प्रकरण को अनावश्यक रूप से लंबित न रखें और प्राथमिकता के आधार पर सभी शिकायतों का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करें। राजस्व विभाग में शिकायतों के समाधान में धीमी प्रगति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कलेक्टर श्री

सिंह ने कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। विशेष रूप से बैरसिया तहसील में सीएम हेल्पलाइन और राजस्व प्रकरणों के निराकरण पर जोर देने के निर्देश दिये। साथ ही नगर निगम, स्वास्थ्य, श्रम और सहकारिता विभाग में लंबित सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों को संतोषजनक रूप से हल करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सिंह ने राजस्व महाअभियान 3.0 के तहत सभी राजस्व अधिकारियों को आरसीएमएस पोर्टल पर लंबित प्रकरणों का समाधान कर भोपाल को प्रथम स्थान पर लाने की कोशिश करने के निर्देश दिए। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष कैंप और रणनीति बनाकर जनता के साथ संवाद स्थापित करते हुए अधिक से अधिक राजस्व प्रकरणों का समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

कलेक्टर ने सभी एसडीएम को निर्देश दिए कि अपने क्षेत्रों के अस्पतालों में अग्नि सुरक्षा के इंतजामों की समीक्षा करें। साथ ही पटाखों की दुकानों का निरीक्षण करें, गोदामों को शहर से बाहर उचित स्थान पर शिफ्ट करने, भूमि आवंटन, भूमि अधिग्रहण और धारणाधिकार प्रकरणों को समयबद्ध रूप से हल करने के निर्देश दिए। बरखेड़ी अब्दुला में प्रस्तावित अत्याधुनिक गौशाला निर्माण की प्रगति की समीक्षा कर समय-सीमा में टेंडर जारी कर निर्माण कार्य प्रारंभ करने के निर्देश भी दिए।

200 करोड़ की लागत से गोविंदपुरा क्षेत्र में दुरुस्त होगा सीवेज नेटवर्क : राज्यमंत्री गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि गोविंदपुरा क्षेत्र में 200 करोड़ रुपए लागत के सीवेज दुरुस्ती के कार्य कराए जाएंगे। राज्यमंत्री श्रीमती गौर रविवार को गोविंदपुरा के वार्ड क्रमांक 54 में आयोजित विकास कार्यों के भूमि-पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रही थी। उन्होंने लगभग 60 लाख रुपए की लागत से होने वाले कई निर्माण कार्यों का भूमि-पूजन किया।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि क्षेत्र के विकास कार्यों के लिए राशि की कोई कमी नहीं है। जनता की आवश्यकता को पूरा करना

हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि जल्द ही अमृत योजना के जरिए 200 करोड़ रुपए की लागत से सीवेज लाइन के निर्माण का कार्य गोविन्दपुरा क्षेत्र में शुरू होने जा रहा है। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि सकारात्मक सोच के साथ अगर काम किए जाए तो कोई भी परेशानी नहीं आती। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि क्षेत्र में जहां कहीं भी पानी की पाइप लाइन में कम दबाव से पानी आता है ,उसे तुरंत दुरुस्त किया जाए।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने वार्ड क्रमांक 54 के साकेत नगर 9-बी के एकता पार्क में बाउंड्रीवॉल, ओपन जिम और बीयू बाउंड्रीवॉल से एमराल्ड पार्क सिटी तक सीवर लाइन निर्माण का भूमि-पूजन किया। इसके साथ 9-ए साकेत नगर के अटल पार्क में बैठक के लिए शेड, गेट और एक्यूप्रेशर पाथ-वे का भूमिपूजन किया। आदर्श एकता उद्यान में बाउंड्रीवॉल पर खूबसूरत पेंटिंग और पार्क का विकास करने के निर्देश दिए। बर्फानी धाम में पार्क के सौंदर्यकरण के लिए 7 लाख रुपए लागत से बनने वाली बाउंड्रीवॉल का भूमिपूजन भी किया। साथ ही वार्ड क्रमांक 55 में बागमुगलिया एक्सटेंशन में रोड के निर्माण का भूमि-पूजन किया।

सेक्टर अधिकारी फील्ड में करेंगे योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा

31 दिसंबर तक प्रत्येक ग्राम में योजनाओं के क्रियान्वयन का मूल्यांकन करें : कलेक्टर

समय-सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। समय-सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने जिले को विभिन्न सेक्टरों में विभाजित कर जिला एवं खंड स्तरीय अधिकारियों को सेक्टर अधिकारी के रूप में जिम्मेदारी देने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने कहा कि सेक्टर अधिकारी संबंधित सेक्टर में सभी विभागों के योजनाओं के क्रियान्वयन की नियमित समीक्षा करेंगे। सभी अधिकारी 31 दिसंबर तक अधिक से अधिक फील्ड भ्रमण करेंगे। सभी ग्रामों में शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा करेंगे। 31 दिसंबर की स्थिति में सभी पात्र हितग्राहियों को शासन की हितग्राहीमूलक योजनाओं सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, पीएम किसान सम्मान निधि योजना आदि से शत प्रतिशत लाभान्वित किया जाना सुनिश्चित करेंगे। कलेक्टर ने कहा कि संबंधित उपखण्ड अधिकारी (राजस्व) इस अभियान में अग्रणी भूमिका का निर्वहन करेंगे।

राजस्व महा-अभियान 3.0 15 नवंबर से 15 दिसंबर तक: कलेक्टर ने कहा कि राजस्व विभाग के राजस्व प्रकरणों के त्वरित निराकरण एवं राजस्व अभिलेख की त्रुटियों को ठीक करने हेतु राजस्व महा-अभियान 3.0 का आयोजन 15 नवंबर से 15 दिसंबर तक किया गया है। इस अभियान में नामांतरण, बटवारा, अभिलेख दुरूस्ती, सीमांकन, परम्परागत रास्तों का चिन्हाकन, नक्शे में बंटाकन, आधार में आर.ओ.आर. खसरे की लिंकिग, फार्मर रजिस्ट्री, पी.एम. किसान सैचुरेशन एवं स्वामित्व के आवेदनों का त्वरित निराकरण किया जायेगा। कलेक्टर ने समस्त उपखण्ड अधिकारी एवं तहसीलदारों को निर्देशित किया है कि दिये गये निर्देशानुसार कार्य पूर्ण कराते हुए प्रतिदिन की प्रगति से अवगत कराना सुनिश्चित करेंगे। इसके साथ ही कलेक्टर ने तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार को निर्देशित किया है कि अपने क्षेत्रान्तर्गत कम से कम एक ग्राम को राजस्व वाद से मुक्त ग्राम घोषित कराने की पहल करेंगे।

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश: कलेक्टर ने कहा कि धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत जिले की 134 जनजातीय बाहुल्य ग्रामों में 18 विभागों की 25 सेवाओं का शत प्रतिशत क्रियान्वयन किया जाना है। संबंधित विभाग समीक्षा कर कार्ययोजना तैयार कर लें। कलेक्टर ने समस्त उपखण्ड अधिकारियों को खंड स्तर पर बैठक का आयोजन नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए हैं।

अभियान चलाकर समाधान में चयनित विषयों से संबंधित शिकायतें निराकृत कराने के निर्देश: सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने कहा कि सभी अधिकारी अभियान चलाकर समाधान ऑनलाइन में चयनित विषयों से संबंधित शिकायतों का प्राथमिकता से निराकरण कराया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देशित किया है कि अन्य शिकायतों का भी निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित करायें। अन अटेन्डेड तथा निम्न गुणवत्ता से बंद शिकायतों की संख्या न्यूनतम होनी चाहिए। बजट के अभाव के कारण लंबित शिकायतों को छोड़कर शेष सभी शिकायतों का शतप्रतिशत निराकरण सुनिश्चित करायें। कलेक्टर ने कहा कि ऐसे प्रकरण जिसमें राज्य स्तर से कार्यवाही अपेक्षित है, लगातार पत्राचार कर फॉलोअप करें।

चिकित्सालयों में फायर सेफ्टी ऑडिट करने के निर्देश: कलेक्टर सोमवंशी ने जिला चिकित्सालय सहित जिले के सभी चिकित्सालयों में फायर सेफ्टी ऑडिट करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने निर्देशित किया है कि सभी चिकित्सालयों में आग बुझाने वाले उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करें। साथ ही उन्हें उपयोग करने का प्रशिक्षण संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दिलाएं।

गत वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी उपलब्ध कराने के निर्देश: आगामी 13 दिसम्बर को सरकार के एक वर्ष पूरे हो रहे हैं। सरकार की एक वर्ष की उपलब्धियों का 15 नवम्बर से 10 दिसम्बर तक लगातार प्रचार-प्रसार किया जाना है। कलेक्टर ने सभी विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया है कि इसके लिए एक वर्ष की विभागीय उपलब्धियों की जानकारी तथा सफलता की कहानी जिला जनसम्पर्क कार्यालय सीधी को अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

हमारा शौचालय हमारा सम्मान अभियान 19 नवंबर से 10 दिसंबर तक: मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज ने बताया कि विश्व शौचालय दिवस 19 नवंबर से हमारा शौचालय हमारा सम्मान अभियान 10 दिसंबर तक चलाया जावेगा। इस अभियान के तहत सभी संस्थागत शौचालयों, सार्वजनिक शौचालयों, विद्यालयों, आंगनवाड़ी केंद्रों के शौचालयों की विशेष साफ-सफाई का अभियान चलाया जावेगा। इस अवधि में अक्रियाशील शौचालयों को क्रियाशील बनाने की कार्यवाही की जावेगी। इस अवधि में अच्छे शौचालयों को पुरस्कृत भी किया जावेगा। उन्होंने नगरीय निकायों तथा ग्राम पंचायतों को निर्देशानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही आंगनवाड़ी केंद्रों, विद्यालयों, छात्रावासों तथा महाविद्यालयों में जागरूकता संबंधी गतिविधियों के आयोजन के निर्देश दिए गए हैं।

बैठक में उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, सिहावल एसपी मिश्रा, मझौली आर पी त्रिपाठी, उप पुलिस अधीक्षक गायत्री तिवारी सहित सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

विद्या सदन स्कूल के दो खिलाड़ी राष्ट्रीय प्रतियोगिता हेतु चयनित

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। संचालनालय भोपाल द्वारा दिनांक 12 नवंबर 2024 को जारी प्रदेश स्तरीय सूची में ग्रामीण अंचल में स्थापित श्रीनिवास तिवारी विद्यासदन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नगवां में अध्यनरत अंडर 17 आयु वर्ग में कक्षा दसवीं के छात्र अंशुल मिश्रा डिस्कस थ्रो में तथा कक्षा आठवीं के छात्र शंकर दयाल कोल भाला फेंक में, मध्य प्रदेश की टीम हेतु भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में चयनित दोनों खिलाड़ी दिनांक 19 नवंबर से 23 नवंबर तक उज्जैन में आयोजित प्री नेशनल कोचिंग कैप हेतु 18 नवंबर को रवाना हो गए। प्रशिक्षण उपरांत दोनों खिलाड़ी 26 नवंबर से 30 नवंबर तक लखनऊ में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल होंगे। कम समय में विद्यालय द्वारा प्राप्त खेल उपलब्धियां की स्थानीय खेल प्रेमियों ने सराहना की है।

विद्यालय के संस्थापक शिव बालक पांडेय, डायरेक्टर दिनेश द्विवेदी प्राचार्य ओंकार प्रसाद द्विवेदी द्वारा दोनों छात्रों को राष्ट्रीय प्रतियोगिता में अच्छे प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दी है तथा स्कूल कैप्टन कार्तिक तिवारी अंगिता द्विवेदी ,खेल कैप्टन, गणेश कोल एवं राधा रावत सहित विद्यालय के सभी खिलाड़ियों ने दोनों खिलाड़ियों को बधाई दी है।

पटवारी के कार्यप्रणाली से परेशान ग्रामीण करेंगे वरिष्ठ अधिकारी से शिकायत

मीडिया ऑडीटर, त्योंथर निप्र। रीवा जिला मुख्यालय से लगभग 110 किमी दूरी पर स्थित त्योंथर तहसील के विभिन्न हल्के के पटवारी के कार्यशैली से किसान सहित ग्रामीण परेशान हैं ताजा मामला राजापुर हल्का में हाल ही में पदस्थ पटवारी आकांशा धुरिया से ग्रामीण परेशान हैं जिसकी शिकायत करने जल्द ही ग्रामीण वरिष्ठ अधिकारियों का दरवाजा खटखाने की तैयारी कर रहे हैं प्रदेश के मुखिया पहले ही सख्त निर्देश दिए है कि पटवारी सहित तमाम कर्मचारी प्रतिदिन मुख्यालय या हल्के में रहकर किसानों की समस्या दूर करेंगे पर त्योंथर तहसील के राजापुर हल्के की पटवारी सीएम पर भी भारी पड़ रही है और किसानों को खून के आशु रुलाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही वही ग्रामीण अखिलेश मिश्रा नेकहा ऐसे भ्रष्ट पटवारी को जल्द जल्द राजापुर हल्के से हटा दिया जाए क्योंकि मैडम प्रति कार्य में लालच रहती हैं जिसकी शिकायत 181 नंबर पर की गई थी पर कोई कार्यवाही नहीं हुई जिसको लेकर ग्रामीणों में काफी आक्रोश है जल्द वरिष्ठ अधिकारियों से पूरे कार्यप्रणाली को लेकर शिकायत करेंगे कार्यवाही की मांग करेंगे

कांग्रेस कार्यकर्ताओं का धरना प्रदर्शन, जिलाध्यक्ष बोले- जिले में ही नहीं बल्कि प्रदेश में महंगाई और बेरोजगारी बढ़ रही है

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी में कलेक्ट्रेट गेट के सामने सोमवार शाम 4 बजे कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार के मुद्दों को लेकर धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान जिला कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष ज्ञान सिंह के अलावा अन्य लोग भी मौजूद रहे हैं। कांग्रेस जिला अध्यक्ष सिंह ने आरोप लगाते हुए कहा- जिले में ही नहीं बल्कि प्रदेश में महंगाई बढ़ रही है, बेरोजगारी भी बढ़ रही है। इसके अलावा भ्रष्टाचार और आदिवासियों पर अत्याचार हो रहे हैं। इसके बारे में कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष ने बताया है। इसे लेकर सोमवार को धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों कार्यकर्ता और गरीब जनता भी साथ रही है। जहां उन्होंने आरोप लगाया है कि किसानों को खाद नहीं मिल पा रही है। जिसकी वजह से उनकी खेती नष्ट हो रही है।

कांग्रेस जिला अध्यक्ष बोले- भ्रष्टाचार चरम पर है, कोई सुनवाई नहीं हो रही: आगे कांग्रेस जिला अध्यक्ष ने कहा- चारों तरफ प्राइवेट करने का काम चल रहा है। सभी चीज प्राइवेट होती चली जा रही है। लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए शासकीय संपत्ति को भी नुकसान पहुंचाया जा रहा है। सीधी जिले में भ्रष्टाचार चरम पर है और कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

जिले में छोटी दुकानों पर हो रही कार्रवाई: कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता दान बहादुर सिंह ने बताया कि सीधी शहर में सीएमओ मिनी अग्रवाल ने गरीबों पर अत्याचार किए हैं। छोटी दुकानों पर कार्यवाही की गई है। बड़ी दुकानों पर कार्यवाही नहीं हो रही है। छोटी दुकान के संचालक किसी कदर अपना रोजी-रोटी चल रहे थे अब उनका घर बार छीन गया है। इतना ही नहीं बल्कि कई टेंडर ऐसे पास हुए हैं। जिन्हें होना ही नहीं चाहिए था, जिन्हें ब्लैक लिस्ट कर दिया गया है। उन्हें फिर से टेंडर सीधी जिले में दिया गया है।

जायज मांग पूरी नहीं होने पर आंदोलन किया जाएगा: कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष ज्ञान सिंह ने बताया है कि अगर सरकार किसानों और आम जनता को परेशान करेगी और उनकी जायज मांगों को पूरा नहीं करेगी, तो हम बड़ा आंदोलन करने के लिए मजबूर हो जाएंगे। जिसकी जवाबदारी खुद की होगी। वही, इस धरना प्रदर्शन में मुख्य रूप से कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष ज्ञान सिंह के अलावा जिला कांग्रेस कमेटी सीधी के प्रवक्ता पंकज सिंह,दद्दा सिंह और दान बहादुर सिंह मौजूद रहे।

कलेक्टर का आदेश, स्कूलों में शिक्षक की जगह कोई और पढ़ाएगा तो होगी कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले के स्कूलों में पदस्थ शिक्षक के स्थान पर कोई दूसरा व्यक्ति पढ़ाता मिला तो संबंधित शिक्षक के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। यह आदेश सोमवार को बीईओ और संकुल प्राचार्य की बैठक में कलेक्टर ने दिए।

कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला ने कहा कि बच्चों की शिक्षा में गुणवत्ता लाने की आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षक अपने कर्तव्यों को ठीक से निभाएं, बच्चों को मेन्यू के अनुसार गुणवत्ता पूर्ण मध्याह्न भोजन दें, सीएम हेल्पलाइन की कई शिकायतें लंबित हैं, सभी का तत्काल प्रभाव से निराकरण करें।

शिकायतों के निराकरण के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। अपर कलेक्टर ने आदेश जारी कर पी.एम. मॉनिट, सी.एम. हाउस एवं प्रभारी मंत्री जिला सीधी से प्राप्त पत्रों एवं शिकायतों के त्वरित निराकरण कराने हेतु सुजीत मिश्रा सहायक परियोजना समन्वयक (रमसा) कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी सीधी को जिला स्तरीय नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। उन्होने समस्त कार्यालय प्रमुखों को निर्देशित किया है कि जिला स्तरीय नोडल अधिकारी से समन्वय स्थापित कर पी.एम. मॉनिट, सी.एम. हाउस एवं प्रभारी मंत्री जिला सीधी से प्राप्त पत्रों एवं शिकायतों के त्वरित निराकरण कराने में आवश्यक सहयोग प्रदान करें।

27 जोड़ों का सामूहिक विवाह

नवदंपती को 49 हजार रुपए का चेक और घरेलू सामान भेंट किया

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली में मुख्यमंत्री कन्या विवाह व निकाह योजना के अंतर्गत सोमवार को 27 जोड़ों का विवाह किया गया। इस दौरान नवदंपतियों को उपहार व 49 हजार रुपए का चेक भी दिया गया। कार्यक्रम में सिंगरौली विधायक रामनिवास शाह बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे। वैवाहिक कार्यक्रम में हजारों बाराती भी मौजूद रहे। कार्यक्रम बैढ़न में स्थित अटल बिहारी सामुदायिक भवन में आयोजित किया गया था। इस दौरान पाइथन बैढ़न जनपद के अंतर्गत आने वाले ग्राम पंचायत और शहरी क्षेत्र से 22 जोड़ों का चयन किया गया था। सभी को उपहार भी प्रदान किए गए।

नव दंपतियों को आशीर्वाद देने विधायक रामनिवास शाह, महापौर रानी अग्रवाल, कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला, जनपद पंचायत सीईओ समेत कई अधिकारी और कर्मचारी भी मौजूद रहे। बारातियों के स्वागत के लिए लजीज खाने के भी इंतजाम किए गए थे। बताया गया कि आज के दिन देवसर और चितरंगी में भी सामूहिक विवाह योजना के तहत कार्यक्रम रखा गया था।

नवागत कमिश्नर सुरभि गुप्ता ने संभाला पदभार

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल की नवागत कमिश्नर सुरभि गुप्ता ने सोमवार को पदभार ग्रहण कर लिया है। इसके बाद कमिश्नर ने कार्यालय के सभागार में विभागीय अधिकारियों के साथ चर्चा की। उन्होंने कहा- विभागों द्वारा संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन बेहतर तरीके से सुनिश्चित करें जिससे पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ मिल सके। सभी अधिकारी समय पर कार्यालय पहुंचे। योजनाओं में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतें। इसके बाद कमिश्नर ने शहडोल मुख्यालय में पदस्थ जिला प्रशासन के अधिकारियों से परिचय प्राप्त किया। गौरतलब है कि सीएम के दौरे के ठीक तीन दिन पहले शहडोल कमिश्नर रहे श्रीमन शुक्ल को हटा दिया गया था।

शासकीय महाविद्यालय मड़वास में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रतियोगिताओं का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार ए वं प्राचार्य डॉ. आई.पी.प्रजापति के मार्गदर्शन में शासकीय महाविद्यालय मड़वास में भारतीय ज्ञान परंपरा की महाविद्यालय स्तर की प्रतियोगिताओं का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संदीप कुमार यादव उप सरपंच ग्राम पंचायत मड़वास उपस्थित थे। तो वही विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी रामानुज तिवारी ऊपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. दीपक अग्निहोत्री ने की। मुख्य प्रतियोगिताओं में भाषण प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के कई छात्र/छात्राओ ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आकांक्षा मिश्रा ने किया। आभार प्रदर्शन डॉ. अमिता खरे ने किया। भाषण प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में डॉ राजेश कुमार पटेल ,डॉ. सुरेंद्र प्रसाद गुप्ता, डॉ निशा सिंह ऊपस्थित थे । कार्यक्रम में मुख्यरूप से डॉ संगीता मिश्रा, डॉ रामधारी जायसवाल, डॉ कमलेश जायसवाल, डॉ अनुराग तिवारी,डॉ पंकज मिश्रा प्रो.प्रवीण कुमार साकेत, डॉ ज्योति रजक, डॉ लक्ष्मीकांत कुशवाहा, सुंदर लाल प्रजापति, अनिल केवट सहित महाविद्यालय के छात्र-छात्रा उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश शासन के निर्देशानुसार 16 नवंबर 2024 को प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति महाविद्यालय सीधी में अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस मनाया गया। यह कार्यक्रम डॉ. लहरी सिंह के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार के डॉ. अनिल सिंह, डॉ.विनोद कुमार साकेत, डॉ. नागेंद्र सिंह, डॉ. राकेश कुमार प्रजापति, डॉ.आशुतोष पांडेय, डॉ.अर्चना सिंह, डॉ. निवेदिता लखेरा एवं छात्र/छात्राएँ उपस्थित रहे।

डॉ. लहरी सिंह ने अपने उद्बोधन में परिवार, समाज व देश के प्रति सहिष्णुता रखने की बात कही तथा समाज के सभी वर्गों से साथ मिलकर भाईचारा निभाने की अपील की। महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक डॉ. अनिल सिंह ने अपने उद्बोधन में सामाजिक व धार्मिक सहिष्णुता के साथ- साथ राजनैतिक सहिष्णुता पर जोर दिए जाने की बात रखी। डॉ. अश्वनी द्विवेदी सहायक प्राध्यापक इतिहास ने भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़कर सहिष्णुता पर अपना उद्बोधन दिया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.पी केसिंह ने छात्र-छात्राओं से सहिष्णुता का भाव रखने की अपील की।

अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस का यह कार्यक्रम भारतीय ज्ञान परंपरा के नोडल अधिकारी डॉ. आर एन स्वर्णकार की देख-रेख में संपन्न हुआ। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं के बीच भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें शिवम गुप्ता बीएससी तृतीय वर्ष को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

आम सूचना

मैं अपने पक्षकार के निर्देशानुसार आम जनता को यह सूचित कर रहा हूँ कि मेरे पक्षकार द्वारा संपत्ति जो कि मौजा-रीवा (मोहल्ल्ला-नगरिया) मौजा रीवा, मोहल्ला नागरिया नगर पालिका रीवा वार्ड नम्बर 38, ज़ा नं 553, पटवारी हल्का नं 23, रीवा ब्लाक और सर्कल रीवा, तहसील हुजूर नगर एवं जिला रीवा में स्थित खसरा नं 312, नामान्तरण पश्चात खसरा नं 312/12 कुल रकबा 40×60=2400 वर्गफीट, है को पूर्व भूमिस्वामी श्रीमती निशा मेघवानी पत्नी श्री सुरेश मेघवानी ने श्री राजबहादुर सिंह पिता श्री अभय सिंह एवं श्री संजय मिश्र पिता श्री कशी प्रसाद मिश्र से पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक-28.06.2010, रजिस्ट्रेशन नंबर-2236 के माध्यम से क्रय किया था। इसके पश्चात् श्रीमती निशा मेघवानी एवं श्री सुरेश कुमार मेघवानी दोनों की मृत्यु होने के बाद दोंनो के बारशान हम श्री संदीप मेघवानी एवं श्री विशाल मेघवानी दोनों के पिता श्री सुरेश कुमार मेघवानी का नाम राजस्व अभिलेखों में फौती नामान्तरण आदेश पारित दिनांक 18.10.2024 जिमका राजम्ब प्रकरण क्रमांक 6183/A-6/2024-25 है जो कि तहसीलदार रीवा के द्वारा पारित किया गया है, के द्वारा राजस्व अभिलेखों में नाम दर्ज किया गया है।

यह कि श्री संदीप मेघवानी एवं श्री विशाल मेघवानी द्वारा IDFC FIRST Bank Limited शाखा रीवा से उक्त संपत्ति बंधक कर ऋण प्राप्त किया जा रहा है जिसकी सुरक्षा हेतु श्री संदीप मेघवानी एवं श्री विशाल मेघवानी द्वारा उक्त संपत्ति बैंक में बंधक किया जा रहा है उक्त संपत्ति पर पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक-28.06.2010, रजिस्ट्रेशन नंबर-2236 को बैंक में जमा कर साम्यिक बंधक किया जा रहा है अत: जिस किसी व्यक्तित, संस्था, बैंक आदि को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो अथवा किसी प्रकार का कोई विवाद हो तो वह प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस के अन्दर मेरे पक्षकार IDFC FIRST Bank Limited शाखा रीवा को अथवा मेरे कार्यालय में लिखित रूप में मय दस्तावेजों के साथ उपस्थित होकर प्रस्तुत करें, समय उपरांत किसी भी आपत्ति पर विचार नही किया जावेगा।

दिनांक:- 18.11.2024

भवदीय

साकेत प्यासी एडवोकेट

319, जिला एवं संत्र न्यायालय रीवा (म.प्र.)

समाज में व्याप्त अंध विश्वास को दूर करने के लिए आयोजित हुआ- जादू नही विज्ञान है समझना समझाना आसान है कार्यक्रम

विद्यार्थियों ने नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किये रोचक कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। शासकीय हाई एवं हायर सेकेन्डरी स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रूचि जागृत करने उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और विभिन्न चमत्कारिक घटनाओं के पीछे निहित विज्ञान के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से जादू नहीं विज्ञान है कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय स्तर पर नियमित रूप से किया जा रहा है। इन गतिविधियों के माध्यम से जहां विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति अरूचि या डर दूर होकर रूचि जागृत होती है वही विद्यार्थियों के माध्यम से जनसामान्य के बीच व्याप्त अंधविश्वास को दूर करने में भी मदद मिलती है। विज्ञान के चमत्कारों के माध्यम से स्कूली बच्चों का ज्ञानवर्धन करना, विज्ञान के प्रति जागरूकता उत्वन्न करना, प्रयोगो को समझाने हेतु सरल बनाना एवं जन सामान्य में व्याप्त अंधविश्वास को दूर करना। यही इस कार्यक्रम का मुख्य एवं व्यापक उद्देश्य है।

एपीसी रमसा डॉ सुजीत मिश्र ने जानकारी देते हुए बताया कि 16 नवंबर को शा.उ.मा.वि. क्रमांक-2 सीधी में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 140 विद्यार्थी 28 मार्गदर्शी शिक्षक शामिल हुये जिसमे 17 विद्यालयों मडवा, भरूही, खिरखोरी, कमछ, पथरौला, सी.एम.राईज मझौली, मॉडल मझौली, पोडी, कन्या सीधी, मॉडल कुसमी, उपनी, मॉडल रामपुर नैकिन, पनवार, पटपरा, अमिलिया, डॉगा, पोखरा के विद्यार्थियों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने ढोंगी पाखण्डी बाबा गॉव की भोली भाली जनता के बीच विज्ञान की चमत्कारिक घटनाओं को कैसे तोड़ मंडोर कर अपने को सिद्ध बाबा बताते है, उनके घर के भूत को भगाने उनकी समस्याओं को दूर करने का वादा कर उन्हे अपने झांसे में ले आते है और ठग लेते है। जबकि यह विज्ञान की चमत्कारिक घटनायें है। विज्ञान में भूत का कोई अस्तित्व नहीं है। जिला स्तरीय कार्यक्रम में छात्रों ने वैज्ञानिक तरीके से नारियल की जटा में आग लगाना, पीलिया झाडना, नीबू काटने पर खून निकलना, पानी में आग लगाना, पानी को चलनी में रोकना, आग से नही जलने वाली रूमाल, कोका कोला को रंगहीन करना आदि प्रदर्शन किया।

उपनी विद्यालय की नाटिका जिले में रही प्रथम: उत्कृष्ट विद्यालय सीधी के शिक्षक डॉ सुधाकर धर द्विवेदी, अमरवाह के डॉ हेमांगद शुक्ला और मॉडल मझौली की कंचन तिवारी ने सभी 17 विद्यालय के विद्यार्थियों के प्रस्तुतीकरण पश्चात शा.उ.मा.वि. उपनी के विद्यार्थियों के नाटिका को प्रथम स्थान, पनवार द्वितीय एवं उत्कृष्ट विद्यालय मझौली तृतीय स्थान प्राप्त किया।

जिला स्तरीय कार्यशाला में राजेश सिंह प्राचार्य जमुआ न 1, कृष्णा मिश्रा, बीरेन्द्र कुमार वर्मा, कमलापति गौतम, राकेष शुक्ला, कुमारी रचना टांडिया, कुमारी कंचन तिवारी, हेमांगद शुक्ला, बालेन्दु शेखर दुबे, संजय सोनी द्वारा विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ पी.एल. मिश्रा द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। उत्कृष्ट विद्यालय के प्राचार्य एस.एन. त्रिपाठी, प्रवीण शुक्ला, डॉ सुजीत मिश्रा एपीसी रमसा एवं विभिन्न विद्यालय के शिक्षक उपस्थित रहे।

विचार

आखिर कौन सुनिश्चित करेगा त्वरित न्याय

सुप्रीमकोर्ट ने आधिकारिक तौर पर चल रही 'बुलडोजर संस्कृति' पर रोक लगा दी है। सुप्रीमकोर्ट ने कहा कि राज्य 'शक्ति ही अधिकार है' के खुलेआम प्रदर्शन में लिप्त हैं। वे रातों-रात बेघर और बेसहारा हो चुके परिवारों के बारे में कुछ भी सोचे बिना ऐसा करते हैं। सुप्रीमकोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि उचित प्रक्रिया अपनाए बिना नागरिकों की संपत्ति को ध्वस्त करना कानून के नियमों के विपरीत है। जस्टिस बी.आर. गवई और के.वी. विश्वनाथन की पीठ ने संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपनी शक्ति का उपयोग करते हुए कुछ शर्तें निर्धारित की हैं, जिनमें अनिवार्य नोटिस भी शामिल है, जिनका अधिकारियों को संपत्ति को ध्वस्त करने से पहले पालन करना होगा। 2022 में नागरिकता अधिनियम विरोधी प्रदर्शनों के दौरान इस प्रथा ने गति पकड़ी और तब से हरियाणा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में अक्सर दंगों के बाद इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। विनाश के पैमाने का अंदाजा लगाने के लिए, 2022 और 2023 के बीच, स्थानीय, राज्य और केंद्रीय अधिकारियों ने 1,53,820 घरों को ध्वस्त कर दिया, जिससे 7,38,438 लोग बेघर हो गए। न्यायालय ने इन विध्वंसों को चुनौती देने वाले कार्यकर्त्ताओं और पीड़ितों द्वारा लाई गई याचिकाओं की एक श्रृंखला को संबोधित किया। इसने इस प्रथा को अवैध घोषित किया, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया-

-उचित प्रक्रिया के बिना व्यक्तियों को दंडित करना 'कानूनविहीन स्थिति' बनाता है जहां 'शक्ति ही सही है।' कार्यकारी अधिकारी अभियुक्तों की संपत्ति को नष्ट करके उन्हें दंडित करने के लिए न्यायाधीश के रूप में कार्य नहीं कर सकते।

-आपराधिक न्याय शास्त्र यह मानता है कि जब तक दोष साबित न हो जाए, तब तक अभियुक्त निर्दोष है।

-घर को ध्वस्त करने से पूरा परिवार दंडित होता है। सामूहिक दंड का एक रूप जो असंवैधानिक है। सर्वोच्च न्यायालय ने उन कदमों को स्पष्ट किया है जो किसी भी अवैध संरचना को ध्वस्त करने से पहले अधिकारियों को उठाने चाहिएं। उचित प्रक्रिया का पालन सुनिश्चित करने के लिए, निम्नलिखित उपायों की श्रृंखला को रेखांकित किया गया है- सबसे पहले, किसी भी अवैध संरचना को ध्वस्त करने से पहले कम से कम 15 दिन की मोहलत दी जानी चाहिए।

दूसरा, विध्वंस के लिए आधार स्पष्ट होने चाहिएं, तथा नोटिस में विशिष्ट उल्लंघनों और विध्वंस के लिए कानूनी आधार का विवरण होना चाहिए। इसे संबंधित कलैक्टर और जिला मैजिस्ट्रेट के समक्ष भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए।तीसरा अपील के अधिकार से संबंधित है, जिसके तहत आरोपी को व्यक्तिगत रूप से आदेश को चुनौती देने का मौका मिलना चाहिए।

बुलडोजर एक्शन पर कोर्ट का आदेश मनमानी पर अंकुश

योगेंद्र योगी

सरकारें की गलतफहमी है कि एक बार चुनाव जीतने के बाद उन्हें मनमानी का अधिकार मिल जाता है। इसी भ्रम में सरकारें अपने को अदालत से ऊपर समझने लगती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोर एशन के मामले में फैसला देकर सरकारों का यह सपना तोड़ दिया है। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला दिल्ली की आप सरकार के मामले में दिया है, किन्तु यह लागू सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों पर होता है। सुप्रीम कोर्ट ने 13 नवंबर को बुलडोजर एशन के खिलाफ दायर याचिका पर फैसला सुनाते हुए तीखी टिप्पणी की। साथ ही बुलडोजर की कार्रवाई को लेकर गाइडलाइन तय कर दी। फैसला सुनाते हुए कोर्ट ने दो टूक कहा कि किसी भी मामले में आरोपी होने या दोषी ठहराए जाने पर भी घर तोडना सही नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने जमीयत उलेमा-ए-हिन्द बनाम उरी दिल्ली नगर निगम व अन्य से संबंधित केस में दो टूक कहा है कि इस मामले में मनमाना रवैया बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

अधिकारी मनमाने तरीके से काम नहीं कर सकते। बगैर सुनवाई आरोपी को दोषी नहीं करार नहीं दिया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा अपना घर पाने की चाहत हर दिल में होती है। यद्यपि यह फैसला दिल्ली सरकर से संबंधित है पर इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस फैसले के बाद अब योगी सरकार के लिए बुलडोजर एक्शन लेना भी मुश्किल हो जाएगा। कार्यपालिका के पास असीम शक्तियां होती हैं। इसी बल पर हर साल सुप्रीम कोर्ट के आदेशों को कार्यपालिका विभिन्न कारणों को आधार बनाकर सैकड़ों आदेशों का अनुपालन नहीं करती है।

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार से शुरु हुआ बुलडोजर एक्शन का यह सिलसिला पूरे देश में फैल गया था। राज्यों की सरकारों ने इसका राजनीतिक इस्तेमाल करने में कसर बाकी नहीं रखी। वोट बैंक राजनीति ऐसे फैसलों में साफ नजर आती है। हालांकि उत्तर प्रदेश में बुलडोजर एक्शन अपराधियों के आवास और व्यवसायिक प्रतिष्ठान गिराने के लिए लिया गया था। बुलडोजर एक्शन में भी अपराधियों में भेदभाव के उदारहण मौजूद हैं। इसका दुरुपयोग भी सांप्रदायिक आधार पर किया गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसी सख्त कार्रवाई से अपराधियों में कहीं न कहीं खौफ उत्पन्न होता है। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने जिस तरह माफिया या गैंगस्टर का सफाया किया, उससे काफी हद तक अपराधों पर लगाम लग सकी है। इस कार्रवाई से शायद ही कोई इत्तफाक रखता हो। सवाल यही आता है कि अपराध रोकने की आड़ में सरकार क्या कानून से ऊपर है।

बुलडोजर एक्शन में यही बात नजर आती है। दरअसल यह काम देश की अदालतों का है कि सुनवाई के बाद आरोपी को सजा देने या नहीं देने का। बुलडोजर एक्शन में ऐसे न्याय की संभावना पहले ही खत्म हो जाती है, जहां बगैर किसी सुनवाई के फैसला सुना दिया जाता है। इससे यदि आरोपी गलत ना भी हो तो उसे घर या दुकान तुड़वाने की सजा भुगतनी पड़ती है। जबकि सजा तय करने की जिम्मेदारी अदालतों की है। सरकारों की यह हरकत निश्चित तौर पर अदालतों के मामले में दखलंदाजी रही है। बुलडोजर एक्शन की कार्रवाई सरकारों को बेशक सस्ती लोकप्रियता दिला सकती है, न्याय नहीं। महाराजगंज जिले में सड़क के फोर लेन की चौड़ीकरण के संबंध में एक व्यक्ति के मकान गिराने के लेकर कोर्ट ने काफी तीखी टिप्पणी दी और उत्तर प्रदेश सरकार पर 25 लाख का जुर्माना भी लगाया। हालांकि यह विकास कार्यों के लिए की गई कार्रवाई थी। इसमें सरकार की वह मंशा नहीं थी कि किसी अपराधी का घर गैरकानूनी अवैध कब्जा की बात कहकर गिराई गई हो। फिर भी कोर्ट ने पीड़ित की बात सुनी। इस तरह के अतिक्रमण हटाने के भी कायदे-कानून बने हुए हैं। उनका पालना किए गए बगैर सीधे बुलडोजर दौड़ा देना, अन्याय ही कहा जाएगा। ऐसे मामलों की भी कमी नहीं हैं, जहां आम आदमी की सम्पत्ति को अतिक्रमण के नाम पर ढहा दिया जाता है, वहीं रसूखदारों की तरफ प्रशासन की आंख उठाने की भी हिम्मत नहीं होती।

देश का शायद ही ऐसा कोई शहर होगा जहां, प्रभावशाली लोगों के अतिक्रमण तोडने में सरकार और प्रशासन ने उदाहरण पेश किए होंगे। सरकार और प्रशासन प्रभावशाली लोगों के सामने कैसे नतमस्तक हो जाते हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण नोएडा के ट्विन टावर का मामला है। सुप्रीम कोर्ट ने अगस्त 2021 में सुपरटेक के नोएडा एक्सप्रेसवे पर स्थित एमराल्ड कोर्ट प्रोजेक्ट के अपैक्स और सियान टॉवरों को अवैध ठहराया था। दोनों 40 मंजिला टावरों को ढहाने का आदेश दिया गया। कोर्ट ने कंपनी को फ्लैट खरीदारों को ब्याज के साथ पैसे वापस करने का आदेश दिया। जबकि इस मामले में सरकार और नोएडा ऑथरिटी सब कुछ जानते हुए भी हाथ पर हाथ धरे हुए बैठे रहे। नोएडा अथॉरिटी को भी इस ध्वस्तिकरण पर निगरानी करने और रिपोर्ट अदालत को देने का आदेश दिया गया है। इस आदेश के कुछ महीनों बाद बाद ट्विन टावर को ढहा दिया गया।

बुलडजोर एक्शन लेने वाली सरकार और प्रशासन को यह पहले से ही पता था कि ये टावर नियमों के विपरीत बनाए गए हैं। इसके बावजूद शासन-प्रशासन में बैठे जिम्मेदार आंखें मूंदे बैठे रहे। यहां बुलडोजर चलाने की किसी की हिम्मत नहीं हुई। इसकी उपेक्षा ऐसे ही नहीं की गई। इसमें भारी भ्रष्टाचार की गंध चारों तरफ से आ रही थी, किन्तु अदालत के फैसले से पहले किसी ने इसकी परवाह नहीं की, वहीं कमजोर के मामले में बुलडोजर एक्शन लेने में फुर्ती दिखाई जाती है। देश में भूमाफिया और बिल्डर की शासन-प्रशासन से मिलीभगत के किस्से आम हैं।

देश के महानगर से लेकर छोटे शहरों में अतिक्रमणों की बाढ़ आई हुई है। ये अतिक्रमण एक दिन में नहीं हुए। अतिक्रमियों ने सार्वजनिक सुविधा के क्षेत्र तक नहीं छोड़े। देश में शायद ही ऐसी कोई सड़क या फुटपाथ होगा, जहां अतिक्रमण ने पांव नहीं पसारे। वन क्षेत्र हो या गोचर भूमि, यहां तक की तालाब, नदियों और झीलों के बहाव क्षेत्र भी अतिक्रमियों की भेट चढ़ गए, किन्तु शासन-प्रशासन की तंद्रा भंग नहीं हुई। ये तभी जागते हैं जब अदालतों का डंडा चलता है। इन अतिक्रमियों के निर्माण पर बुलडोजर चलाने से सब कतराते हैं। इसका उदाहरण जयपुर का रामगढ़ बांध है। कभी बरसाती जल से सरोबार रहने वाला यह प्रसिद्ध बांध अतिक्रमियों का शिकार हो गया। कभी जयपुर की लाइफ लाइन माने जाने वाला यह बांध कई दशकों से सूखा पड़ा है। देश में ऐसे सैकड़ों उदाहरण मौजूद हैं जहां अतिक्रमियों ने प्राकृतिक स्त्रोतों को ही निगल लिया। यहां तक खनन करके की पहाड़ के पहाड़ गायब कर दिए। अरावली की पहाड़ी श्रृंखला इसका भ्रष्टाचार और लापरवाही का सबसे बड़ा उदाहरण है। अतिक्रमण के मामले में वोट की राजनीति की बदौलत ही छोटे-बड़े शहरों में अवैध कच्ची-पक्की बस्तियां तक बस गई। ये अतिक्रमण सालों-साल चलते रहे हैं, किन्तु नेता-अफसरों के गठजोड़ के कारण इन्हें जड़ से खत्म नहीं किया जा सका। दरअसल बुलडोजर चलना तो ऐसे अतिक्रमणों पर चाहिए, जिसने देश के आम लोगों को पैदल चलना तक दुभर कर रखा है। इनके बजाए सिर्फ चुनिंदा अतिक्रमियों को अपराधी बता कर बुलडोजर चलवाना सरकारों की बदनियति को ही उजागर करता है। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से सरकारों को सबक लेना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में यह कहीं नहीं कहा कि अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई नहीं हो, बल्कि वैधानिक प्रक्रिया अपनाने पर जोर दिया है।

अब कनाड़ा में खालिस्तान बनने की प्रक्रिया शुरू

अशोक मधुप

अभी कुछ माह पूर्व 25 मई को हमने अपने लेख में कहा था कि कनाडा में खालिस?तान समर्थकों की गतिविधि को भारत नजर अंदाज करता रहे। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को खालिस्तानियों का समर्थन करने दे, जल्दी ही खालिस्तान कनाडा में बने। भारत में नही। ऐसा होता अब नजर आने लगा है। खालिस्तानी वहां मांग करने लगे हैं कि कनाडा हमारा है। बाकी दुनिया भर के लोग अपने-अपने देश वापस जांए।

कनाडा में निकाले गए एक 'नगर कीर्तन' के दो मिनट के वायरल वीडियो में खालिस्तान समर्थकों ने कनाडाई लोगों को 'घुसपैठिया' कहा। उन्हें 'इंग्लैंड और यूरोप वापस जाने' के लिए कहा। वीडियो में जुलूस में शामिल लोगों को यह कहते हुए सुना जा सकता है। 'यह कनाडा है, हमारा अपना देश। तुम कनाडाई वापस जाओ। भारतीय खुफिया सूत्रों ने इस घटना को कनाडा में नॉर्मल करार दिया। कहा कि खालिस्तानी धीरे-धीरे देश के सभी पहलुओं पर 'कब्जा' कर रहे हैं। ठीक से निगरानी न होने की वजह से ये खालिस्तानी समूह स्थानीय कनाडाई लोगों से भी नियंत्रण छीन रहे हैं। हिंदुओं से सुरक्षा के लिए पैसे मांगे जा रहे हैं और अब उनकी कॉलोनियों में स्थानीय लोगों को खतरा हैं।

कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो भारत में खालिस्तान बनाने की मांग करने वाले अतिवादियों पर सत्ता संभालने के बाद से पूरी तरह मेहरबान है। भारत द्वारा इन अतिवादियों के बारे में दी गई जानकारी पर वे कुछ कार्रवाई नहीं कर रहे, अपितु भारत पर ही आरोप लगा रहे हैं कि भारत से फरार अपराधी खालिस्तानी अतिवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में उसके राजनयिक का हाथ है। हमने पहले लेख में कहा था भारत को चाहिए कि यह कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को भारत के खालिस्तान का समर्थन करने वाले अतिवादियों का समर्थन करने दें। कुछ समय ऐसा ही चलने दें। हां सार्वजनिक रूप से भारत उसे चेतावनी देने का सिलसिला जारी रखें। अपने यहां खालिस्तान समर्थकों पर सख्ती रखें। कुछ समय ऐसा ही चलता रहा तो यह निश्चित है कि अब खालिस्तान भारत में नही कनाडा में बनेगा। कनाडा की धरती पर बनेगा। हमारा पहला कथन अब सही होता दीखने लगा है। कुछ समय ऐसा ही होता रहा तो ये खालिस्तान समर्थक कनाडा के लिए ही सिर दर्द बनेंगे। कनाड़ा ने सख्ती की तो ये उसके खिलाफ विद्रोह पर उतर आएंगे।

आज जो कनाड़ा कर रहा है, कभी वही भारत के कुछ नेताओं ने किया था। वह पंजाब में खालिस्तान की बढ़ती गतिविधियों को नजर अंदाज करते रहे। परिणाम स्वरूप पंजाब में रहने वाले हिंदुओं को पंजाब छोड़ने के लिए कहा जाने लगा। उन पर हमले होने शुरू हो गए। सिख आंतकवाद पंजाब में ही नही बढ़ा, अपितु उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र को भी उसने अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया। इस दौरान पंजाब में धार्मिक नेता भिंडरावाला तेजी से लोकप्रिय हुए। कहा जाता है कि राजनैतिक लाभ के लिए केंद्र की तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उसे प्रश्य देना शुरू कर दिया। हालत यह हुई कि वहीं भिंडरावाला कांग्रेस के लिए भस्मासुर साबित हुआ। उसने स्वर्ण मंदिर में डेरा जमा लिया। मजबूरन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को भिंडरावाला को स्वर्ण मंदिर से निकालने के लिए फौज का सहारा लेना पड़ा। बाद

में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी केही दो सिख सुरक्षा गार्ड ने उनकी हत्या कर दी।

आज जो कनाडा में हो रहा है, वह 40 साल से खालिस्तान समर्थकों को पोषित किए जाने का परिणाम है। कनाडा में खालिस्तान समर्थक आंदोलन पिछली सदी के आठवें दशक में शुरू हो गया था। पियरे ट्रूडो के प्रधानमंत्री बनने के बाद इसकी जड़ें गहरी हुईं। उनके कार्यकाल के दौरान ही तलविंदर परमार भारत में चार पुलिसकर्मियों की हत्या करने के बाद कनाडा भाग गया था।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने जून 1973 में कनाडा की यात्रा की थी और पियरे ट्रूडो के साथ उनके व्यक्तिगत संबंध सौहार्दपूर्ण थे। लेकिन, पियरे ट्रूडो ने 1982 में तलविंदर परमार को भारत प्रत्यर्पित करने का अनुरोध ठुकरा दिया। इसके लिए बहाना बनाया गया कि भारत का रुख महारानी के प्रति पर्याप्त रूप से सम्मानजनक नहीं है।

पियरे ट्रूडो के पद छोड़ने के ठीक एक साल बाद तलविंदर परमार ने जून 1985 में एयर इंडिया की फ्लाइट 182 (कनिष्क) में बम विस्फोट की साजिश की। इसमें विमान में सवार सभी 329 लोग मारे गए। हालांकि मरने वालों मे अधिकतर कनाडा के ही नागरिक थे। इस विमान हादसे में कुछ तो पूरे परिवार ही खत्म हो गए। अगर पियरे ट्रूडो ने तलविंदर परमार को भारत प्रत्यर्पित करने का इंदिरा गांधी का अनुरोध मान लिया होता, तो कनिष्क विमान में विस्फोट नहीं हुआ होता। भारतीय-कनाडाई राजनीति के जानकार मानने लगे हैं कि जो गलती पियरे ट्रूडो ने तब की थी, वहीं उनके बेटे जस्टिन ट्रूडो भी आज कर रहे हैं। अपनी सरकार चलाने के लिए कनाडा में खालिस्तान समर्थक उग्रवादियों के प्रति सहानुभूति रखकर वही गलती कर रहे हैं। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने भारत के ऊपर बेबुनियाद आरोप लगाकर कनाडा में पल रहे खालिस्तानी समर्थकों को हवा दे दी है। प्रधानमंत्री के इन आरोपों के बाद कनाडा के अलग-अलग राज्यों में खालिस्तान समर्थकों ने ऐसी साजिश रचनी शुरू कर दी, जिससे वहां रह रहे न सिर्फ भारतीयों बल्कि डिप्लोमेट्स और भारतीय दूतावास के लिए बड़ा खतरा पैदा हो गया है बल्कि कनाडा में बसे भारतीय हिंदुओं को भी खतरा बनेगा। रक्षा मामलों के विशेषज्ञों का मानना है कि कनाडा की जमीन पर पहले से ही खालिस्तान समर्थकों को कनाडा की सरकार प्रश्रय देती आई है। यही वजह है कि कनाडा सरकार के समर्थन के चलते भारत विरोधी गतिविधियां इस देश के अलग-अलग हिस्सों में लगातार चलती रहती हैं। बीते कुछ समय में खालिस्तान जनमत संग्रह के नाम पर कनाडा की सरकार न सिर्फ इन भारत विरोधी खालिस्तानियों को सुरक्षा मुहैया कराती आई है बल्कि कार्यक्रम स्थलों की भी उपलब्ध करवाती आई है। पिछले दिनों एक शोभा यात्रा में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरागांधी की हत्या की झांकी निकालना भी इसी कड़ी का हिस्सा है।

ओवैसी की छत्तीसगढ़ के भाजपाइयों को नसीहत

कहा- हमें ना सिखाएं दीन, वक्फ बोर्ड ने कहा था- तकरीर से पहलें परमिशन लें

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ की मस्जिदों में जुमे की नमाज (शुक्रवार की नमाज) के बाद होने वाली तकरीर (बातचीत) के टॉपिक के लिए वक्फ बोर्ड की इजाजत लेनी होगी। टॉपिक विवादित ना हो, इसलिए छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड के सदस्यों ने यह निर्णय लिया है। मुतवल्ली (मस्जिद की संपत्ति का प्रबंध करने वाला) इस नियम का पालन नहीं करेगा, उसके खिलाफ लीगल एक्शन लिया जाएगा।

छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम राज ने इस संबंध में मौखिक निर्देश जारी किए हैं। इस पर सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि अब भाजपाई हमें बताएंगे की दीन क्या है? अब अपने दीन पर चलने के लिए इनसे इजाज़त लेनी होगी?

वहीं इस पर सीएमसाय के मीडिया सलाहकार पंकज कुमार झा ने ओवैसी पर तंज किया है। उन्होंने कहा कि मियां वक्फ बोर्ड किसी सरकार के सीधे अधीन नहीं होता। वक्फ बोर्ड में अभी अधिकतर सदस्य कांग्रेस की ओर से नियुक्त किए गए हैं।

नियम का पालन नहीं करने पर लीगल एक्शन: चर्चा के दौरान डॉ. राज ने कहा, कि मस्जिद को राजनीतिक अड्?डा बनाकर रखा गया है। वहां पर धर्म की बात हो, वोट किस पार्टी को देना है, इसे लेकर फतवा जारी ना हो। केंद्र की योजनाओं की अधूरी जानकारी मुस्लिम समुदाय को ना दी जाए, इसलिए यह निर्णय लिया गया है।

डॉ. सलीम राज ने कहा कि शुक्रवार यानी 22 नवंबर से इसे लागू कर दिया जाएगा। जो भी मुतवल्ली (मस्जिद की संपत्ति का प्रबंध करने वाला) इस नियम का पालन नहीं करेगा, उसके खिलाफ लीगल एक्शन लिया जाएगा।

वॉट्सऐप ग्रुप से होगी मॉनिटरिंग: छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड के सदस्यों के अनुसार तकरीर के टॉपिक की मॉनिटरिंग वॉट्सऐप ग्रुप के जरिए होगी। ग्रुप में प्रदेश भर की मस्जिदों के मुतवल्लियों (मस्जिद की संपत्ति का प्रबंध करने वाला) को जोड़ा जाएगा। जुम्मे की नमाज के बाद होने वाली तकरीर में क्या मुद्दे रहेंगे? इन मुद्दों को मुतवल्ली ग्रुप में देंगे।

ग्रुप में आई जानकारी को वक्फ बोर्ड के सदस्य पढ़ेंगे और जो मुद्दे उन्हें विवादित लगेंगे, उनमें संशोधन करके दोबारा संबंधित मस्जिद के मुतवल्ली को वो भेजा जाएगा। संसोधित मुद्दों पर ही तकरीर होगी।

पूर्व अध्यक्ष रिजवी ने किया विरोध: छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड के इस निर्णय पर बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष सलाम रिजवी ने विरोध किया है। दैनिक भास्कर से चर्चा के दौरान कहा, कि वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम राज का यह निर्णय देश का पहला ऐसा निर्णय है, जिसमें इमामो को निर्देशित किया जा रहा है। बोर्ड के पास ऐसा कोई भी नियम नहीं है, जिसमें इमामों को निर्देश दिया जा सके। तकरीर में कुरान और हदीस की बातों का उल्लेख होता है। प्रदेशभर में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी मस्जिद से भड़काऊ तकरीर की गई हो। कुछ नेता राजनीतिक लाभ लेने के लिए ये सब कर रहे हैं। समाज के लिए अहित सोचने वाले लोगों से समाज निपटेगा।

ओवेसी ने एक्स पर किया ट्वीट: छत्तीसगढ़ में मुतवल्लियों को दिए गए निर्देश पर ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के नेता और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने ऐतराज जताया है। सोशल मीडिया एक्स पर उन्होंने लिखा कि छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार का वक़्फ़ बोर्ड चाहता है कि 'जुम्माह का खुतबा (भाषण) देने से पहले खतीब (भाषण देने वाला) अपने खुतबे (भाषण) की जांच वक़्फ़ बोर्ड से करवाएं और बोर्ड की इजाजत के बिना खुतबा (भाषण) ना दें'।

वक़्फ़ बोर्ड के पास ऐसी कोई क़ानूनी ताक़त नहीं, अगर होती भी तो भी वह संविधान के दफा 25 के ख़िलाफ़ होती।

ठग ने ट्रेनिंग के बहाने ट्रेन के डिब्बे गिनवाए

8वीं फेल ने रेलवे में नौकरी का झांसा देकर इंजीनियरिंग-ग्रेजुएट को ठगा

मीडिया ऑडीटर, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही एजेंसी। छत्तीसगढ़ की मरवाही पुलिस ने रेलवे में नौकरी लगाने के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह के सरगना कपिल बरनवाल को पश्चिम बंगाल के आसनसोल से गिरफ्तार किया गया है। थाना मरवाही क्षेत्र के कुम्हारी गांव के रहने वाले पुनीत प्रधान (28) से रेलवे में नौकरी लगवाने के नाम पर 12 लाख की ठगी की गई थी।

पीड़ित से रकम अलग-अलग किश्तों में आसनसोल में चली 9 महीने की ट्रेनिंग के दौरान ली गई थी। पीड़ित के अनुसार ट्रेनिंग के नाम पर उसे प्लेटफॉर्म ले जाकर रेल के डिब्बे गिनवाए गए। उसके साथ दूसरे प्रदेशों से आए युवक भी थे।

ट्रेनिंग का हर एक किरदार फर्जी निकला: जब ठगी का पता चला तो युवक के होश उड़ गए क्योंकि उसकी पूरी ट्रेनिंग और ट्रेनिंग का हर एक किरदार फर्जी निकला। ठगी का अहसास होते ही पुनीत ने पुलिस से संपर्क कर थाना मरवाही में अपराध दर्ज कराया था।

जानकारी के मुताबिक ठग गिरोह का सरगना आठवीं फेल है। पीड़ित के अनुसार ट्रेनिंग में इंजीनियरिंग और बीए पास युवक भी पहुंचे थे।

मामले में 3 आरोपी पहले ही गिरफ्तार: मरवाही पुलिस ने साइबर सेल की मदद से पहले तीन और आरोपियों को गिरफ्तार किया था, जिसमें एक युवक अमित मंडल ट्रेनिंग देता था तो विधान बैरागी और योगेश रजक स्थानीय स्तर पर युवाओं को झांसा देकर आसनसोल भेजते थे।

आसनसोल में भी जमानत पर बाहर था: इनका सरगना कपिल बरनवाल फरार था और बार-बार लोकेशन बदल रहा था। जैसे ही मुख्य आरोपी आसनसोल आया, मरवाही पुलिस को जानकारी मिली। टीम ने आसनसोल पहुंचकर कपिल बरनवाल (35) को गिरफ्तार किया। आरोपी कपिल आसनसोल में भी फर्जी पुलिस अधिकारी बनकर घूमने के प्रकरण में जमानत पर था।

आरोपी की पत्नी मेकअप आर्टिस्ट: मरवाही पुलिस ने आरोपी की ट्रांजिट रिमांड हासिल कर उसे मरवाही ले जाकर पुलिस रिमांड पर रखा था। पूछताछ करने पर पता चला कि आरोपी कपिल बरनवाल की पत्नी पूजा हलदर मेकअप आर्टिस्ट हैं।

ठगी करने में अलग-अलग किरदार निभाया: पत्नी के जरिए कई लोगों से कपिल के संपर्क हैं, जो उसके लिए ठगी करने में अलग-अलग किरदार निभाते थे। जैसे कभी कोई आरपीएफ वाला बन जाता तो कोई स्वास्थ्यकर्मी। पूछताछ में आरोपी कपिल ने बताया कि वह आठवीं फेल है और वह यह सब कुछ लग्जरी लाइफ जीने के लिए किया करता था।

अन्य सदस्यों की भूमिका की जांच जारी: पूछताछ में गिरोह के अन्य सदस्यों की भूमिका और नाम पते के बारे में मिली जानकारी के आधार पर जांच जारी है।

गर्ल्स हॉस्टल से अंडरगारमेंट्स चोरी करने वाला गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, कोंडागांव एजेंसी। कोंडागांव में पुलिस ने गर्ल्स हॉस्टल से अंडरगारमेंट्स चोरी करने वाले एक बदमाश युवक को गिरफ्तार किया है। युवक रविवार रात करीब 12 बजे छत से कूदकर जीएनएम इंस्टीट्यूट के गर्ल्स हॉस्टल में पहुंचा। हॉस्टल में नर्सिंग की करीब 85 छात्राएं मौजूद थीं। बदमाश एक-एक करके हॉस्टल के कमरों के दरवाजे खटखटाने लगा। शुरू में तो लड़कियों ने ध्यान नहीं दिया। लेकिन जब ये बार-बार होने लगा तो लड़कियां डर गईं और चिल्लाने लगीं। इसी बीच बदमाश एक कमरे के भीतर दाखिल हो गया। कमरे के भीतर से बदमाश लड़कियों के अंडरगारमेंट्स उठाने लगा। इस बीच बाकी लड़कियों ने जब उसे रोकने की कोशिश कि तो आरोपी ने उन पर हमला कर दिया। इस हमले में कुछ लड़कियों को चोट भी आई है। फिलहाल पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, जिसकी पहचान राहुल नेम के रूप में हुई है।

छात्रों के बीच चले लात-घूंसे, एक का सिर फूटा

आत्मानंद स्कूल के 6वीं-8वीं के स्टूडेंट्स, पुलिस का नाम सुनते ही भागे

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा में मानिकपुर चौकी क्षेत्र के स्वष्टरुस्थित आत्मानंद हाई सेकेंडरी स्कूल के बाहर छात्रों के बीच मारपीट हो गई। मारपीट में एक छात्र का सिर फट गया। खून से लथपथ छात्र को अस्पताल भेजा गया है।

बताया जा रहा है कि लगभग 30 से 35 की संख्या में छात्र एकजुट थे और दो गुट आमने-सामने हो गए। दोनों के बीच पहले से विवाद चल रहा था। लंच टाइम में स्कूल से लगे हेलीपैड मैदान में सभी जमा हुए और दोनों गुटों पहले बहस हुई इसके बाद हाथापाई शुरू हो गई। मारपीट के दौरान युवक का सिर फटने के बाद सभी बच्चे भागने लगे। वहीं आसपास कुछ छात्रों ने इसकी जानकारी पुलिस को देने की बात कही। पुलिस का नाम सुनते ही पूरा हेलीपैड खाली हो गया और बच्चे भाग खड़े हुए।

जानकारी के मुताबिक मारपीट करने वाले बच्चे छठवीं और आठवीं के हैं। इससे पहले भी कई बार छात्रों के बीच इस स्कूल में मारपीट की घटना सामने आ चुकी है। इस संबंध में हमने स्कूल की प्रिंसिपल अलका फिलिप्स से फोन पर जानकारी ली गई।

अफगानिस्तान-उज्बेकिस्तान के 3 लोगों ने उड़ाए बैरिकेड्स

कॉन्स्टेबल को कार से कुचलने की कोशिश, दिल्ली पासिंग गाड़ी में पकड़ाए आरोपियों में महिला भी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में 3 विदेशियों ने नाकेबंदी पॉइंट पर 140 की रफ्तार से कार चलाते हुए स्टॉपर उड़ा दिए। यहां नाकेबंदी में तैनात कॉन्स्टेबल पर भी उन्होंने कार चढ़ाने की कोशिश की। हालांकि, जवान बाल-बाल बच गया। पुलिस ने दिल्ली पासिंग कार का पीछा कर उन्हें दबोच लिया। मामला रतनपुर थाना क्षेत्र का है। दरअसल, पुलिस अफसरों को नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो से जानकारी मिली कि अफगानिस्तान, उज्बेकिस्तान के रहने वाले तीन ड्रग तस्कर दिल्ली पासिंग कार पर सवार हैं। खबर मिलते ही पुलिस अफसरों ने सभी थाना क्षेत्रों में नाकेबंदी कराई।

इस दौरान रतनपुर थाने की टीम भी नेशनल हाईवे के अंदर स्टॉपर लगाकर गाड़ियों की जांच कर रही थी, तभी दिल्ली पासिंग कार क्रमांक ष्टरु9 ष्ट 4208 भैरव बाबा मंदिर के पास सड़क पर लगे बैरिकेड्स को तोड़ते हुए निकलने लगी।

बीच सड़क ट्रक अड़ाकर कार को रोका, तीन विदेशी पकड़ाए: इधर, कार का पीछा करते हुए एंटी साइबर एंड क्राइम यूनिट की टीम और रतनपुर थाना प्रभारी नरेश चौहान आगे बढ़े, लेकिन कार की रफ्तार इतनी तेज थी कि, आरोपी आगे निकल गए। उन्होंने इसकी सूचना कोनी थाने को दी, जिसके बाद इसके बाद कोनी थाने की टीम ने बीच सड़क पर ट्रक अड़ाकर खड़ा कर दिया। इसी दौरान कार सवार पकड़े गए। इसमें तीन लोग सवार थे, जिन्हें पकड़कर एंटी साइबर एंड क्राइम यूनिट की टीम को सौंपा गया। कार की तलाशी लेने पर कुछ नहीं मिला। मामले में रतनपुर थाने में कार से कुचलने के प्रयास पर कार सवार तीनों लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

तीनों अफगानिस्तान और उज्बेकिस्तान के रहने वाले हैं और दिल्ली में रहते हैं। पकड़े गए आरोपियों में वैईरुद्दीन (37), फयाजुद्दीन (32) और नजीरा खोरे (37) शामिल हैं।

स्वदेशी मेले में स्टूडेंट्स ने बिखेरा जलवा

ग्रुप डांस और चित्रकला का किया प्रदर्शन, केंद्रीय राज्यमंत्री साहू बोले-स्वदेशी वस्तुओं का प्रसार-प्रसार जरूरी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर के साइंस कॉलेज ग्राउंड में आयोजित स्वदेशी मेले में रविवार को स्कूली बच्चों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। इस दौरान देश भक्ति के साथ ही भक्तिमय और फिल्मी गीतों पर बच्चियां थिरकती नजर आईं। वहीं बच्चों ने अलग-अलग थीम पर चित्रकला के जरिए एक से बढ़कर एक चित्र उकेरे। कार्यक्रम में केंद्रीय राज्यमंत्री तोखन साहू ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी ने नारा दिया कि लोकल फॉर वोकल जिसका सीधा अभिप्राय यह है कि स्वदेशी उत्पादों की खरीदी करने के साथ ही स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार प्रसार भी करना है।

देश में बनी वस्तुओं को ज्यादा खरीदें: उन्होंने कहा कि लोकल के बाद ही कोई वस्तु ग्लोबल होता है। अपने देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आवश्यक है कि हम अपने देश में बनी वस्तुओं को ज्यादा खरीदें। इससे रोजगार का सृजन होगा और देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

ठीक इसी प्रकार से अन्य संसाधनों पर हमारी विदेशी निर्भरता में कमी आए। इसके लिए आवश्यक है कि स्वदेशी मेला जैसे आयोजन के माध्यम से जन समुदाय को जागरूक बनाए और जिस प्रकार से स्वदेशी मेला की भव्यता और स्थानीय लोगों का झुकाव इस मेले में दिखाई दे रहा है। कार्यक्रम को बिल्हा विधायक धरमलाल कौशिक ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था पहले पिछड़ी हुई थी, लेकिन पीएम मोदी के नेतृत्व में हम विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं।

स्कूली बच्चों ने नृत्य के माध्यम से जगाया देशभक्ति का जज्बा: मेले के तीसरे दिन रविवार को रंग भरो एवं चित्रकला स्पर्धा आयोजित की गई। इसमें प्रतिभागी बच्चों ने स्पर्धा की थीम स्वंतत्रता संग्राम सेनानियों पर एक से बढ़कर एक चित्र उकेरे। किसी प्रतिभागी ने आजादी पाने कुर्बानी देने वालों को दिल से नमन कहा तो किसी ने देश के लिए बलिदान देने वालों को नम आंखों से याद करते हुए चित्र बनाए।

देशभक्ति ,फिल्मी, भक्तिमय गीतों में नृत्य की प्रस्तुति: इसके साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में समूह नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें महारानी लक्ष्मीबाई स्कूल, नृत्य दर्शिका कथक केंद्र, प्रयास अकेडमी, जेपी वर्मा कॉलेज, खालसा गर्ल्स स्कूल, शिव शक्ति डांस स्कूल सहित करीब 30 ग्रुप के प्रतिभागियों ने देशभक्ति ,फिल्मी, भक्तिमय गीतों में नृत्य की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में बेलटरा विधायक सुशांत शुक्ला, पूर्व विधायक रजनीश कुमार सिंह, डा विनोद तिवारी, डा सुशील श्रीवास्तव अरुणा दीक्षित, प्रफुल्ल शर्मा, डा ललित मखीजा, युगल शर्मा उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में नीता श्रीवास्तव, किरण मेहता, शोभा कश्यप, मीनाक्षी बोबर्डे, मीना गोस्वामी, सुनीता मानिकपुरी, प्रभा बाजपेई, मनीषा मिश्रा, गीता रजक, जया धर, किरण सिंह, जूही वर्मा, चंचल कुशवाहा, सौम्या शुक्ला, आशा निर्मलकर सहित सदस्य मौजूद रहे।

खनिज एवं राजस्व विभाग की बड़ी कार्यवाही

पैनारी में शिवानी कंस्ट्रक्शन द्वारा संचालित अवैध स्टोन क्रशर सील

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। विगत दिवस कलेक्टर के निर्देश पर खनिज एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीम के द्वारा ग्राम पैनारी, तहसील खड़गवा में शासकीय भूमि पर संचालित अवैध क्रशर को सीलबंद किया गया है। ज्ञात हो कि ग्राम पैनारी, तहसील खड़गवां स्थित शासकीय भूमि खसरा न.1109 रकबा 1.81 हेक्टेयर भूमि, मद छोटे झाड़ के जंगल पर ठेकेदार शिवानी कंस्ट्रक्शन अंबिकापुर द्वारा बिना वैध अनुमति के क्रशर स्थापित कर पत्थर क्रशिंग का कार्य किया जा रहा था। ग्रामीणों द्वारा इसकी शिकायत की गई थी। संज्ञान में आने के बाद खनिज और राजस्व विभाग के द्वारा त्वरित कार्यवाही की गई है। कार्यवाही के दौरान अवैध रूप से स्थापित क्रशर क्षेत्र में लगभग 14 ट्रैक्टर ट्रॉली बोल्डर और गिट्टी भंडारित किया जाना पाया गया साथ ही साथ शिवानी कंस्ट्रक्शन के द्वारा लगभग 6300 घन मीटर मिट्टी, मुरूम भी अवैध उत्खनन किया जाना पाया गया है। जिससे खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम 1957 के तहत अवैध उत्खनन का केस दर्ज किया गया है। मौके पर छत्तीसगढ़ खनिज (खनन, परिवहन तथा भंडारण) नियम 2009 के तहत क्रशर को सीलबंद किया गया है इसके साथ ही बिना अनुमति छोटे झाड़ मद की शासकीय भूमि पर अतिक्रमण का मामला होने के कारण क्रशर के विद्युत कनेक्शन को विच्छेदित करते हुए राजस्व विभाग द्वारा स्थल पर स्थापित जनरेटर, पैनल, मोटर कंप्रेशर मशीन को जप्त कर एवं मौके से हटाया जाकर सुरक्षार्थ कोड़ा पुलिस चौकी में रखा गया है।

कार्यवाही में शशि शेखर मिश्रा तहसीलदार खड़गवां, आदित्य मानकर खनिज निरीक्षक, पटवारी सूरज कुमार, पुलिस विभाग विद्युत विभाग, कोटवार एवं अन्य ग्रामीण शामिल रहे।

बिहान योजना से निर्मला मौर्य बनी आत्मनिर्भर

लखपति दीदी बनने संघर्ष की कहानी, निर्मला मौर्य की जुबानी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। बिहान योजना ने छत्तीसगढ़ में महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में एक अहम भूमिका निभाई है। इस योजना ने न केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है, बल्कि उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का मार्ग भी प्रशस्त किया है। इसी क्रम में जिले के मनेन्द्रगढ़ विकासखंड के चनवारीडांड निवासी निर्मला मौर्य की प्रेरणादायक कहानी एक मिसाल बनकर उभरी है। उनकी दृढ़ता और मेहनत ने उन्हें एक सफल उद्यमी के रूप में स्थापित किया है, और आज निर्मला मौर्य "लखपति दीदी" के नाम से जानी जाती हैं।

निर्मला मौर्य का प्रेरणादायक संघर्ष: निर्मला मौर्य का जीवन पहले आर्थिक तंगी और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संघर्ष में बीत रहा था। उनके परिवार की आय का कोई स्थायी स्रोत नहीं था, और परिस्थितियां बेहद कठिन थी। इसी बीच उन्हें छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान योजना के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने इस योजना से जुड़ने का निर्णय लिया, जो उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

बिहान योजना से मिली नई दिशा: बिहान योजना के अंतर्गत निर्मला मौर्य ने अपने कच्चे मकान में एक छोटी सी किराने की दुकान शुरू की। कठिन परिश्रम और अदम्य इच्छाशक्ति के कारण उनकी दुकान चल निकला और उनका आत्मविश्वास बढ़ा। लगातार बैंक से लेन-देन के कारण उनका क्रेडिट स्कोर भी बेहतर हुआ। इससे उन्होंने बैंक से लोन लेकर अपने व्यवसाय को और अधिक विस्तार किया। निर्मला मौर्य के प्रयास और बिहान योजना की सहायता से उनकी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

आज निर्मला मौर्य की सालाना बचत एक लाख रुपए तक पहुंच गई है। उनका जीवन न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हुआ है, बल्कि उनके आत्मविश्वास और सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हुई है। उनकी इस सफलता ने क्षेत्र की अन्य महिलाओं को प्रेरणा दी है।

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री का किया आभार व्यक्त: निर्मला मौर्य ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया है। उन्होंने बताया कि सरकारी योजनाएं केवल योजनाएं नहीं होती, बल्कि वे समाज में बदलाव लाने और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान करती हैं। हम सब को सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं लाभ अधिक-अधिक उठाना चाहिए। जिससे हम अपने जीवन स्तर को बेहतर बना सकें।

अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत: निर्मला मौर्य की सफलता की कहानी अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुकी है। बिहान योजना से जुड़कर वे न केवल अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकती हैं, बल्कि अपने बच्चों का भविष्य भी उज्ज्वल बना सकती हैं। इस योजना से महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान करती है और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है, जिससे वे समाज में अपनी एक नई पहचान बना सकें। बिहान योजना वास्तव में महिलाओं के जीवन को संवारने और उनके सपनों को साकार करने का एक सशक्त माध्यम है। श्रीमती निर्मला मौर्य की सफलता इस बात का प्रमाण है कि इच्छाशक्ति और सही मार्गदर्शन के बल पर किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है। उनकी यह यात्रा उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणादायक साबित हो सकती है जो महिलाएं बेहतर भविष्य का सपना देखती है।

फौजी पति के खिलाफ एफआईआर पर समाज ने निकाला

समाजवालों ने बहन की शादी भी तुड़वाई, हाईकोर्ट ने कलेक्टर-एसपी को जारी किया नोटिस

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले की एक शादीशुदा महिला के पति और समाज ने साथ छोड़ दिया है। पति ने दूसरी महिला से शादी कर ली है। महिला का कसूर ये है कि अपने फौजी पति की प्रताड़ना से तंग आकर थाने में केस दर्ज कराई है, जिससे नाराज होकर समाज वालों ने उनका बहिष्कार कर दिया है। उसकी बहन की भी शादी तुड़वा दी।

प्रताड़ित महिला ने पुलिस और जिला प्रशासन से भी मदद मांगी, लेकिन किसी ने कोई कार्रवाई नहीं की। तंग आकर अब हाईकोर्ट की शरण ली है। महिला की याचिका पर कलेक्टर-एसपी सहित कलार समाज के संभागीय अध्यक्ष को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है।

आईटीबीपी में चाइना बॉर्डर पर पदस्थ है पति: दरअसल, ढेकुना गांव की रहने वाली मुनिका जैन की शादी करीब 17 साल पहले लखनपुरी गढ़ियापारा के रहने वाले राजेश्वर कुमार जैन से हुई थी। राजेश्वर आईटीबीपी में चाइना बॉर्डर पर पदस्थ है। शादी के बाद उनकी एक बच्ची भी हुई।

इस दौरान पति-पत्नी के बीच विवाद शुरू हो गया। धीरे-धीरे कर पति की प्रताड़ना इतनी बढ़ गई कि महिला को पुलिस की मदद लेनी पड़ी। महिला ने अपने पति के खिलाफ मारपीट और घरेलू हिंसा की शिकायत दर्ज कराई।

दिल्ली प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट बोला- 12वीं तक स्कूल बंद करो

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिल्ली-एनसीआर रीजन में सरकारों को निर्देश दिया है कि प्रदूषण की गंभीर स्थिति देखते हुए 12वीं तक के स्कूल बंद करने पर फैसला लें। एक्यूआई का स्तर नीचे लाने के लिए ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान स्टेज 3 और स्टेज 4 के सभी जरूरी प्रतिबंधों को लागू किया जाए। इसी मुद्दे पर सोमवार सुबह जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने केंद्र सरकार से पूछा कि स्टेज 3 की पाबंदियां लागू करने में आपने देरी क्यों की। सुप्रीम कोर्ट ने कहा- आप हमारी इजाजत के बगैर जीआरएपी स्टेज 4 से नीचे नहीं आएंगे। भले ही एक्यूआई 300 से नीचे ही क्यों ना आ जाए। कोर्ट ने 12वीं तक के फिजिकल क्लासेस बंद करने पर भी जल्द फैसला लेने को कहा। सुप्रीम कोर्ट का राज्य सरकारों को 5 निर्देश 1. दिल्ली, हरियाणा और यूपी राज्य सरकारें स्टेज 4 के प्रतिबंध तुरंत लगाएं और इनका सख्ती से पालन किया जाए। 2. ये राज्य एक टीम बनाई जाए जो स्टेज 4 के लागू होने पर नजर रखे। 3. अगर किसी प्रतिबंध का उल्लंघन किया जाता है, तो ऐसे केस सुलझाने के लिए मैकेनिज्म बनाया जाए। 4. जब तक हम अगला आदेश नहीं देते, तब तक स्टेज 4 जीआरएपी लागू रहना चाहिए, भले एक्यूआई 450 से नीचे आ जाए। 5. 10वीं और 12वीं की क्लास अभी भी लग रही है, एनसीआर में शामिल राज्य सरकारें तुरंत स्कूल बंद करने पर फैसला लें।

केजरीवाल को पसंद नहीं थी गहलोत की एलजी से दोस्ती

नई दिल्ली (एजेंसी)। कैलाश गहलोत ने रविवार को आम आदमी पार्टी से इस्तीफा दिया और सोमवार को भाजपा में शामिल हो गए। उन्होंने इसकी वजह पार्टी पर लगे भ्रष्टाचार के आरोप और सीएम आवास शीशमहल पर खर्च हुई सरकारी रकम के कारण बने विवाद को बताया। आप सूत्रों के मुताबिक कैलाश की इस्तीफे की वजह उनकी एलजी वीके सक्सेना से बढ़ती दोस्ती रही। सूत्रों के मुताबिक ये इस्तीफा उस वक्त ही तय हो गया था जब गहलोत और दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना की दोस्ती क्क को अखरने लगी थी। केजरीवाल की सरकार ने जब भी एलजी पर किसी योजना को रोकने के आरोप लगाए, उसमें गहलोत का पक्ष पार्टी से ज्यादा गवर्नर के साथ नजर आया। केजरीवाल ने गहलोत पर कई बार मीटिंग्स में इस दोस्ती को लेकर तंज भी कसा, लेकिन गहलोत ने कभी इस आरोप पर जवाब नहीं दिया। गहलोत और केजरीवाल के बीच दिल्ली के एलजी कांटे की तरह चुभते रहे। मनीष सिसोदिया के जेल जाने के बाद केजरीवाल ने गहलोत पर विश्वास न दिखाकर आतिशी को अपना राइट हैंड बनाया। यहीं से केजरीवाल और गहलोत के बीच एक-दूसरे को झटका देने का खेल शुरू हुआ। जो स्थिति बनी उसमें गहलोत को बीजेपी में लाने में स्ल बड़ी भूमिका में रहे।

महाराष्ट्र और झारखंड में थमा चुनाव प्रचार का शोर, 20 नवंबर को डाले जाएंगे वोट, 23 को आएंगे नतीजे

नई दिल्ली (एजेंसी)। 20 नवंबर को होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव और झारखंड के दूसरे चरण के चुनाव के लिए आज प्रचार समाप्त हो गया। झारखंड में पहले चरण के 43 सीटों के लिए वोटिंग 13 नवंबर को हो चुकी है।

महाराष्ट्र की 288 सीटों के लिए एक चरण में 20 नवंबर को वोट डाले जाएंगे। दोनों ही राज्यों के चुनावी नतीजे 23 नवंबर को आएंगे। महाराष्ट्र में 288 सीटों के लिए कुल 4,136 उम्मीदवार मैदान में हैं, जिनमें 2,086 स्वतंत्र दावेदार हैं। हालाँकि, इस बार, पिछले दो वर्षों में शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अलग होने से राजनीतिक परिदृश्य अधिक खंडित है।

सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन में से, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 149 उम्मीदवार, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने 81 उम्मीदवार और डिप्टी सीएम अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा ने 59 उम्मीदवार मैदान में उतारे हैं। विपक्षी महा विकास अघाड़ी में, कांग्रेस ने 101 उम्मीदवार मैदान में उतारे हैं, उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) के 95 उम्मीदवार और एनसीपी (शरदचंद्र पवार) के 86 उम्मीदवार मैदान में हैं।

लॉरेंस का भाई अनमोल अमेरिका में अरेस्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। गैंगस्टर लॉरेंस के भाई अनमोल की अमेरिका में गिरफ्तारी की खबर आई है। जानकारी के मुताबिक कैलिफोर्निया में उसे अरेस्ट किया गया है। अनमोल पर सलमान खान के घर फायरिंग कराने का आरोप है। सिंगर सिद्धू मूसेवाला के मर्डर में भी अनमोल का नाम आया था। दिल्ली और मुंबई पुलिस ने अभी तक गिरफ्तारी की पुष्टि नहीं की है, लेकिन खुफिया एजेंसी के सूत्रों के अनुसार अमेरिका ने दो हफ्ते पहले अनमोल बिश्नोई के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया था। अनमोल ने बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान के घर पर फायरिंग की जिम्मेदारी ली थी। इसके साथ ही पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला और बाबा सिद्दीकी की हत्या के मामले में भी उसका नाम सामने आया है। एनआईए ने रखा 10 लाख का इनाम हाल ही में राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने गैंगस्टर लॉरेंस के भाई अनमोल बिश्नोई पर 10 लाख रुपए का इनाम रखा था। एजेंसी ने अनमोल के खिलाफ 2022 में दर्ज 2 मामलों में चार्जशीट दाखिल की है। अनमोल का नाम एनआईए की मोस्ट वांटेड लिस्ट में भी शामिल है। साल 2012 में दर्ज हुआ था अनमोल पर पहला मामला लॉरेंस गैंग में भाणु के नाम से जाने जाने वाले अनमोल पर साल 2012 में पहली बार पंजाब के अबोहर में हमले, मारपीट और आर्म्स एक्ट की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था। साल 2015 आते-आते अनमोल पर पंजाब में 6 से ज्यादा मामले दर्ज हो गए थे। इस वक्त अनमोल पर पूरे देश में 22 मामले दर्ज हैं।

कंगना रनोट जिसका प्रचार करने गई, उसी को नहीं पहचाना

शिमला (एजेंसी)। बॉलीवुड अभिनेत्री और हिमाचल प्रदेश की मंडी लोकसभा सीट से सांसद कंगना रनोट चुनाव प्रचार के लिए महाराष्ट्र पहुंची थीं। कंगना यहां जिस भाजपा उम्मीदवार के पक्ष में प्रचार करने पहुंची थीं, उन्होंने उसी को नहीं पहचाना। यह मामला 16 नवंबर का है लेकिन इसका वीडियो हिमाचल प्रदेश अब में सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। कंगना रनोट नागपुर की कामठी विधानसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार शेखर बावन के पक्ष में प्रचार करने पहुंची थीं। कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत ने कंगना के इस वीडियो को सोशल मीडिया पोस्ट करते हुए लिखा कि कंगना जी भाजपा उम्मीदवार के लिए प्रचार कर रही थीं। बीच प्रचार में पूछा यह कौन शख्स है, जवाब था मैं वही उम्मीदवार हूं, जिसके लिए आप प्रचार कर रही हैं। शख्स मौजूदा विधायक भी है। वायरल वीडियो के अनुसार कंगना रनोट अपने बगल में खड़ी एक महिला कार्यकर्ता से पूछ लेती है कि यह शख्स कौन है। जिस पर भाजपा कार्यकर्ता ने बताया कि यह शेखर बावन हैं। भाजपा अध्यक्ष एवं इस सीट के उम्मीदवार हैं। इस बीच शेखर बावन भी कहते नजर आ रहे हैं कि मैं वही भाजपा उम्मीदवार हूं, जिसका आप प्रचार कर रही हैं। लोग कंगना के इस वीडियो पर चुटकी ली रहे हैं।

मणिपुर के जिरीबाम में हिंसा में एक की मौत

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में जातीय हिंसा रूकने का नाम नहीं ले रही। रविवार को जिरीबाम में हुए हिंसक विरोध-प्रदर्शन के दौरान सुरक्षा बलों की गोली से एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि एक अन्य घायल है।घटना रात 11 बजे बाबूपारा इलाके में हुई। सुरक्षा बलों ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए गोलीबारी की थी, जिसमें के अथौबा नामक 20 वर्षीय व्यक्ति की मौत हुई है।जिले में काफी तनाव है, जिसको नियंत्रित करने के लिए सुरक्षा बल तैनात है।

पुलिस ने बताया कि प्रदर्शनकारियों की हिंसक भीड़ ने उसी इलाके में भाजपा और कांग्रेस के स्थानीय कार्यालयों पर धावा बोल दिया।भीड़ ने दफ्तर से फर्नीचर और अन्य संपत्ति लूट ली और आग लगा दी। हिंसा जिरीबाम पुलिस स्टेशन से 500 मीटर के भीतर हुई है। पुलिस पर हालात नियंत्रित न कर पाने का आरोप है।जिरीबाम में बराक नदी से 3 बच्चों सहित 6 विस्थापितों के शव मिलने के बाद हिंसा की आग तेज हो गई है। मणिपुर के वर्तमान हालात को देखते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को आपातकालीन बैठक बुलाई है, जिसमें पूर्वोत्तर संभाग के वरिष्ठ अधिकारी, केंद्रीय गृह सचिव, खुफिया ब्यूरो के निदेशक तथा केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल और असम राइफल्स के अधिकारी उपस्थित रहेंगे।बता दें, हिंसा के बाद से घाटी में 6 लोगों की हत्या हो चुकी है, जिसके बाद सरकार ने 7 जिलों में इंटरनेट बंद किया है और इंफाल पश्चिम और पूर्व में कर्फ्यू लगाया है।

बिहार में कोहरे के कारण 17 ट्रेनें, 6 लाइट लेट

नई दिल्ली/ भोपाल/ पटना/ श्रीनगर (एजेंसी)। देश में ठंड के साथ-साथ कोहरे का असर भी लगातार बढ़ते जा रहा है। बिहार में कोहरे के कारण विजिबिलिटी घटने से 17 ट्रेनें लेट हो गईं। 6 विमानों के टेकऑफ और लैंडिंग में भी देरी हुई। मध्य प्रदेश में भी सर्द हवा चलने का दौर लगातार जारी है। अब स्कूलों की टाइमिंग भी बदली जा रही है। भोपाल में कई प्राइवेट स्कूलों ने 30 मिनट तक टाइमिंग बढ़ा दी है। इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर-उज्जैन में भी समय बदलने की तैयारी है। मौसम विभाग के मुताबिक, 20 नवंबर के बाद से एमपी में सर्दी फिर बढ़ेगी। मौसम विभाग ने कहा है कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, पश्चिम सामान्य से 2 डिग्री रहने की उम्मीद है।

बीजेपी में शामिल हुए कैलाश गहलोत

नईदिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार में परिवहन मंत्री रहे कैलाश गहलोत सोमवार को बीजेपी में शामिल हो गए. उन्होंने एक दिन पहले यानी रविवार को ही मंत्री पद और आम आदमी पार्टी से इस्तीफा दिया था. कैलाश गहलोत ने दिल्ली स्थित बीजेपी मुख्यालय में पार्टी की सदस्यता ली. उन्होंने बीजेपी नेता मनोहर लाल खट्टर, दुष्यंत गौतम और हर्ष मल्होत्रा की मौजूदगी में पार्टी की सदस्यता ली. कैलाश गहलोत के बीजेपी में शामिल होने के सवाल पर दिल्ली में पूर्व मुख्यमंत्री आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि, वे कहीं भी जाने और किसी भी पार्टी में शामिल होने के लिए स्वतंत्र हैं. यह उनकी मर्जी है. वह जहां भी जाएं. कैलाश गहलोत ने रविवार (17 नवंबर) को आम आदमी पार्टी पर बड़ा आरोप लगाते हुए इस्तीफा दे दिया था. उन्होंने कहा था कि एक और दर्दनाक बात यह है कि लोगों के अधिकारों के लिए लड़ने के बजाय हम केवल अपने राजनीतिक एजेंडे के लिए लड़ रहे हैं, इससे दिल्ली के लोगों को बुनियादी सेवाएं प्रदान करने में भी कठिनाई हो रही है.उन्होंने कहा था कि मैंने अपनी राजनीतिक यात्रा दिल्ली के लोगों की सेवा करने की प्रतिबद्धता के साथ शुरू की थी। और मैं ऐसा करना जारी रखना चाहता हूं, यही वजह है कि मेरे पास पार्टी से अलग होने का कोई विकल्प नहीं बचा है. इसलिए मैं आम आदमी पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे रहा हूं।

हरियाणा विधानसभा में खट्‌टर सरकार वाले 2 बिल वापस

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा सत्र के तीसरे दिन की कार्यवाही समाप्त हो गई है। मंगलवार को सुबह 11 बजे से कार्यवाही फिर शुरू होगी। सोमवार को सीएम नायब सैनी ने जॉब सिक्योरिटी बिल पेश किया। इस पर कांग्रेस विधायक गीता भुक्कल ने सवाल उठाए। उन्होंने कहा, इस बिल में आरक्षण का कोई जिक्र नहीं है। पर्ची खर्च के मुद्दे पर गीता भुक्कल ने कहा, मुख्यमंत्री जी हमारे पास भी कई भाजपा नेताओं की पर्चियां हैं। उन्होंने इस मामले पर सीएम की मुस्कुराहट पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा, मुख्यमंत्री जी हंसिए मत, आप बच्चों के साथ ये गलत काम कर रहे हैं। इस पर मंत्री कृष्ण बेदी ने विरोध जताया। गीता भुक्कल ने कहा, मंत्री ने पूरा बिल पढ़ा ही नहीं है।

इससे पहले 2023 में खट्?टर सरकार के दौरान पास किए गए 2 विधेयक वापस लिए गए हैं। इनमें ऑनरेबल डिस्पोजल ऑफ डेडबॉडी और हरियाणा संगठित अपराध नियंत्रण विधेयक शामिल हैं।

खड़गे बोले- भाजपा और आरएसएस जहर की तरह

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने रविवार को भाजपा और क्र्स्स की तुलना जहरीले सांप से की है। उन्होंने सांगली में चुनाव प्रचार के दौरान कहा- अगर भारत में राजनीतिक रूप से सबसे ज्यादा खतरनाक कोई चीज है तो वो है भाजपा और आरएसएस । वे जहर की तरह हैं। अगर सांप काटता है, तो जिस व्यक्ति (जिसे काटा गया है) की मौत हो जाती है। ऐसे जहरीले सांप को मार देना चाहिए। खड़गे के बयान पर भाजपा ने आपत्ति जताई है। भाजपा प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा- खड़गे का बयान भड़काऊ है और चुनाव आयोग को इसका संज्ञान लेना चाहिए। चुनाव आयोग को इसके खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। कांग्रेस-एमवीए सरकार सत्ता में आती है, तो उनका समर्थन न करने वाले लोगों की जान को खतरा होगा।

1. मोदी की सत्ता की भूख खत्म नहीं हो रही है खड़गे ने कहा- मोदी की सत्ता की भूख खत्म नहीं हो रही है। मोदी कल तक यहीं थे। आज वे विदेश में हैं। मणिपुर जल रहा है, लोग मर रहे हैं, आदिवासी महिलाओं का अपमान हो रहा है और महिलाओं के साथ बलात्कार हो रहा है, लेकिन मोदी कभी मणिपुर नहीं गए।

शंभू बॉर्डर पर बैठे किसानों दिल्ली कूच का ऐलान

जालंधर (एजेंसी)। हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर धरने पर बैठे किसान 6 दिसंबर को किसान दिल्ली के लिए कूच करेंगे। चंडीगढ़ में सोमवार (18 नवंबर) को हुई किसानों की मीटिंग में फिर से दिल्ली जान का फैसला लिया गया। बैठक में किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि शंभू बॉर्डर से ही दिल्ली रवाना होंगे। पंधेर का कहना है कि 9 महीने से किसान चुप बैठे हैं, लेकिन सरकारों की ओर से हमारी उपेक्षा की जा रही है। इस कारण दिल्ली जाने का फैसला लिया है। किसान इस बार अपने साथ ट्रैक्टर-ट्रॉली नहीं ले जाएंगे, लेकिन समूह में जाएंगे। पंधेर ने सरकार से मांग की कि उन्हें प्रदर्शन के लिए जगह मुहैया कराई जाए।

किसान नेता पंधेर ने कहा है कि सरकार के पास 6 दिसंबर तक का समय है। अगर सरकार हमारी मांगें पूरी नहीं करती तो किसान पीछे नहीं हटेंगे। जत्थों के साथ दिल्ली कूच करेंगे। अगर आगे कोई रणनीति बनेगी तो मीडिया में बताएंगे।

पंधेर ने कहा, शंभू बॉर्डर पर जहां दीवार बना दी की गई है, वहां से हम आगे बढ़ेंगे। सरकार से हमने प्रदर्शन करने के लिए जंतर-मंतर और रामलीला ग्राउंड में जगह मांगी है।

हमें मौका दें, जिससे हम अपना पक्ष रख पाएं और सरकार हमें प्रदर्शन के लिए जगह मुहैया करवाए। यह अब सरकार पर है कि उन्हें किसानों पर बम फेंक कर बात खत्म करनी है या फिर बैठक के जरिए।

राहुल ने एक हैं तो सेफ हैं का पोस्टर दिखाया

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की वोटिंग से 2 दिन पहले कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने मुंबई में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इसमें उन्होंने मुंबई के धारावी के रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट को लेकर भाजपा सरकार की नीति की आलोचना की। उन्होंने एक तिजोरी से 2 पोस्टर निकाले। एक पोस्टर में एक हैं तो सेफ हैं लिखा था। दूसरे पोस्टर में धारावी की तस्वीर लगाई थी। राहुल ने दोनों पोस्टर लहराते हुए कहा- भाजपा धारावी की जमीन अडाणी को देना चाहती है। एक हैं तो सेफ हैं का मतलब एक- मोदी जी, अडाणी जी, शाह है। सेफ कौन हैं- मोदी जी, अडाणी जी हैं। नुकसान किसका होगा- जनता का होगा। नारा उन्होंने दिया है। यह बिल्कुल सही नारा है।

राहुल ने कहा कि महाराष्ट्र का पैसा महाराष्ट्र के लोगों को मिलेगा या एक व्यक्ति को मिलेगा। कई प्रोजेक्ट्स महाराष्ट्र से छीनकर अन्य राज्यों में गए। 7 लाख करोड़ के प्रोजेक्ट्स छीने गए। महाराष्ट्र की मौजूदा सरकार रोजगार चोरी कर रही है। 5 लाख लोगों का रोजगार छीना गया है। धारावी का भविष्य सेफ नहीं है। किसी एक के लिए धारावी खत्म किया जा रहा है।

धारावी की जमीन वहां रहने वाले लोगों की है। वे वहां सालों से रह रहे हैं। धारावी को कन्वर्ट करने में कई सारी समस्याएं हैं। मैंग्रोव की जमीन छीनी जा रही है। एक व्यक्ति के लिए सारे नियम बदल दिए गए।

देश के पोर्ट, एयरपोर्ट, डिफेंस इंडस्ट्री, धारावी सारा कुछ उस एक व्यक्ति को सौंपा जा रहा है, जिसका प्रधानमंत्री से पुराना रिश्ता है। अडाणी ये काम अकेले नहीं कर सकते। वो प्रधानमंत्री की मदद लिए बिना धारावी की जमीन लोगों से नहीं ले सकते हैं। महाराष्ट्र का धन यहां की जनता को मिलेगा या फिर एक व्यक्ति को मिलेगा- यही चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा है। एशिया की सबसे बड़ी स्लम में शामिल धारावी में करीब 10 लाख लोग रहते हैं। इसी धारावी को रिडेवलप करने के लिए महाराष्ट्र सरकार और अडाणी ग्रुप मिलकर काम कर रहे हैं। इस पर करीब 23 हजार करोड़ रुपए खर्च होने हैं। इसके तहत यहां के लोगों को 350 स्क्वायर फीट एरिया में बने फ्लैट मिलेंगे।

संक्षिप्त समाचार

मौजूदा फॉर्म के आधार पर विश्व चैंपियनशिप में डिंग के खिलाफ गुकेश जीत के दावेदार

कोलकाता (एजेंसी)। विश्व के नंबर एक खिलाड़ी नॉर्वे के मैग्नस कार्लसन का मानना है कि मौजूदा फॉर्म के आधार पर भारतीय स्टार डी गुकेश इस महीने के अंत में विश्व शतरंज चैंपियनशिप के मुकाबले में चीन के डिंग लिरेन के खिलाफ खिताब जीतने के प्रबल दावेदार हैं। गुकेश 25 नवंबर से 15 दिसंबर तक सिंगापुर में होने वाली विश्व शतरंज चैंपियनशिप में मौजूदा चैंपियन डिंग से भिड़ेंगे। इस साल की शुरुआत में टोरंटो में आयोजित कैंडिडेट्स टूर्नामेंट को जीतने के बाद 18 साल के गुकेश ने फाइनल में जगह पक्की की थी। कार्लसन ने यहां टाटा स्टील शतरंज इंडिया रैपिड टूर्नामेंट जीतने के बाद कहा, ''मैं उस मुकाबले के बारे में कुछ खास नहीं कहना चाहता। मौजूदा फॉर्म के आधार पर हालांकि गुकेश का पलड़ा थोड़ा भारी है।'' उन्होंने कहा, '' मुझे लगता है कि शीर्ष स्तर पर शतरंज खेलने की क्षमता के आधार पर यह काफी हद तक बराबरी का मुकाबला होगा। डिंग अगर अपनी लय को हासिल करने में सफल रहे तो उसके पास भी जीतने का अच्छा मौका होगा। गुकेश अपने पिछले टूर्नामेंट में दबाव मे बिखर जा रहे थे।'' कार्लसन ने कहा, '' मुझे अगर भविष्यवाणी करनी हो तो मैं उस खिलाड़ी का नाम लेना चाहूंगा जिसका समग्र प्रदर्शन पिछले कुछ समय में अच्छा रहा है और इस मामले में गुकेश आगे हैं।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने बनाया एक और वर्ल्ड रिकॉर्ड

मुम्बई (एजेंसी)। स्टार फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो भले ही 39 वर्ष के हो गए हैं लेकिन उनकी फिटनेस से इसका अंदाजा बिल्कुल भी नहीं लगता है। वहीं अभी भी उनके वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का सिलसिला कायम है। शुक्रवार को पोलैंड के खिलाफ मैच में उन्होंने गोल किए और बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम किया। रोनाल्डो ने मैच में दो गोल किए जिससे उनकी टीम 5-1 से जीत गई। रोनाल्डो इस जीत के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले खिलाड़ी हैं। रोनाल्डो ने पूर्तगाल के लिए अब तक 132 मैच जीते हैं। शुक्रवार को वह दिग्गज खिलाड़ी सर्जियो रामोस से आगे निकले। रामोस ने स्पेन के लिए 131 मैच जीते हैं। वहीं रोनाल्डो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई रिकॉर्ड अपने नाम कर चुके हैं। साथ ही वह राष्ट्रीय टीम के लिए सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले फुटबॉलर हैं। उन्होंने 217 मैच खेले हैं वहीं वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी भी हैं। वह पुर्गाल के लिए 136 गोल कर चुके हैं। पहले हाफ में कोई भी टीम गोल नहीं कर पाई। दूसरे हाफ में भारत ने पांच गोल किए। 59वें मिनट में राफेल लिआओ ने हेडर से पुर्तगाल के लिए खाता खोला। इसके बाद 72वें मिनट में रोनाल्डो ने पेनल्टी किक को सफलतापूर्वक गोल में बदलकर स्कोर 2-0 कर दिया। 80वें मिनट में ब्रूनो फर्नांडेस ने शानदार शॉट से तीसरा गोल दागा।

आईपीएल नीलामी में हिस्सा लेने के लिए डेनियल विटोरी पर्थ टेस्ट बीच में छोड़ देंगे

पर्थ (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के सहायक कोच डेनियल विटोरी इस सप्ताह के आखिर में होने वाली इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की बड़ी नीलामी में भाग लेने के लिए यहां भारत के खिलाफ शुरुआती टेस्ट के बीच में ही अपना कार्यभार छोड़ देंगे। आईपीएल नीलामी 24-25 नवंबर को सऊदी अरब के जेद्दा में होगी। पांच मैचों की बॉर्डर गावस्कर श्रृंखला का शुरुआती टेस्ट मैच 22 नवंबर से यहां के ऑप्टस मैदान पर शुरू होगा। विटोरी ऑस्ट्रेलिया के सहायक कोच होने के अलावा आईपीएल फ्रेंचाइजी सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के मुख्य कोच भी हैं।

ऑस्ट्रेलिया की टीम के प्रवक्ता ने 'ईएसपीएनक्रिकइंफो' से कहा, ''हम सनराइजर्स हैदराबाद के कोच के तौर पर डैन (विटोरी) की भूमिका का समर्थन करते है। वह आईपीएल नीलामी में हिस्सा लेने से पहले शुरुआती टेस्ट मैच की पूरी तैयारी करेंगे। वह नीलामी के बाद बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के बाकी मैचों के लिए टीम के साथ रहेंगे।'' क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) के राष्ट्रीय विकास कोच लाचलान स्टीवंस पर्थ टेस्ट के दौरान 45 साल के विटोरी की जगह लेंगे। विटोरी के अलावा रिकी पोंटिंग और जस्टिन लैंगर भी आईपीएल नीलामी के कारण 'चैनल सेवन' के लिए कमेंट्री की भूमिका को नहीं निभा पायेंगे। पोंटिंग पंजाब किंग्स जबकि लैंगर लखनऊ सुपर जायंट्स के मुख्य कोच हैं।

विराट की जगह नंबर तीन के लिए बेहतर विकल्प बनकर उभरे हैं तिलक वर्मा

मुम्बई (एजेंसी)। युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा ने जिस प्रकार से दक्षिण अफ्रीका में हुई टी20 सीरीज में नंबर तीन पर उतरते हुए शानदार बल्लेबाज की है। उससे वह आने वाले समय में नंबर तीन पर उतरने के लिए विराट कोहली के सबसे अधिक विकल्प बनकर उभरे हैं। दक्षिण अफ्रीका सीरीज में तिलक ने दिखाया है कि वह लंबी परियां खेलने के साथ ही एक मैच विजेता खिलाड़ी हैं। नंबर-3 पर बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने लगातार दो मैचों में दो शतक लगाये। तिलक ने सबसे पहले घरेलू किकेट और आईपीएल में चमक बिखेरी थी। उसके बाद से ही वह अवसर मिलने पर अंतरराष्ट्रीय मंच में भी लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। तिलका का यहां तक का सफर आसान नहीं रहा है। करियर के शुरुआती दौर में खराब आर्थिक स्थिति के कारण तिलक को काफी परेशानियों का सामना किया है पर उन्होंने कभी हार नहीं मानी। तिलक के पास शुरुआती दौर में बेहतर सुविधा नहीं थी लेकिन उनकी बल्लेबाजी काफी अच्छी थी। इसके बाद भी पिता ने तिलक का पूरा साथ दिया। वर्मा को बचपन के कोच ने टेनिस बॉल क्रिकेट खेलते हुए देखा था, और फिर उन्हें अपने संरक्षण में ले लिया। उन्होंने आईपीएल 2022 में डेब्यू किया था। 2020-21 के विजय हजारे ट्रॉफी में दो शतक बना कर लोगों का ध्यान खींचा। मुंबई इंडियंस ने 2022 की नीलामी में तिलक को एक मोटी रकम देकर अपने साथ जोड़ा। उस समय उनका बेस प्राइस 20 लाख था और वे एक अनकैप्ड खिलाड़ी थे। तब से लेकर तिलक लगातार मुंबई इंडियंस की ओर बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। तिलक ने शानदार आईपीएल सत्र खेला और इसके तुरंत बाद वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज के लिए उन्हें पहली बार टी20 टीम में शामिल किया गया। वह मध्यक्रम में भारत के लिए लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। अपने उपयोगी ऑफ ब्रेक के साथ-साथ बल्लेबाजी के दौरान गियर बदलने की उनकी क्षमता उन्हें इस भारतीय सेटअप में एक बेहतरीन खिलाड़ी बनाती है।

भारतीय बॉक्सर ने अमेरिका की धरती पर उड़ाया गर्दा, दुश्मन को एकतरफा मैच में दी पटखनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेटफिलिक्स इवेंट में जेक पॉल ने दिग्गज बॉक्सर माइक टायसन के खिलाफ बॉक्सिंग मैच लड़ा। इस इवेंट का आयोजन एर्लिंगटन, टेक्सस के स्टेडियम में हुआ। इसी इवेंट में भारतीय बॉक्सर नीरज गोयत का मैच भी हुआ। इस मुकाबले में उनके प्रतिद्वंदी विंधरसन न्यूनेस थे और ये मैच सुपर मिडिलवेट डिवीजन में हुआ। बता दें कि, नीरज रैंकिंग में जगह बनाने वाले पहले भारतीय बॉक्सर हैं। वहीं उनके प्रतिद्वंदी विंधरसन ने बॉक्सर के रुप में अपना प्रोफेशनल डेब्यू किया था। न्यूनेस को डेब्यू का नाथन बार्टलिंग के खिलाफ हार मिली थी। अगर गोयत के विंधरसन न्यूनेस के खिलाफ हुए बॉक्सिंग मैच की बात करें तो ये एकतरपा मुकाबला साबित हुआ। इस मैच में भारतीय बॉक्सर ने न्यूनेस पर अपना दबदबा बनाए रखा। नीरज गोयत ने इस नॉन टाइटल मैच के छठे राउंड में विंधरसन को 60-54 से हराया। वहीं इस मुकाबले में तीनों जज ने मुकाबले का नतीजा गोयत के पक्ष में दिया। देखा जाए तो नीरज की ये बड़ी जीत है और उन्होंने इस जीत के लिए अमेरिका की धरती पर भारत का परचम लहराया है। बता दें कि, सुपरस्टार लोगन पॉल के भाई जेक पॉल ने बॉक्सिंग मैच में माइक टायसन का सामना किया और जेक ने ये मुकाबला जीतते हुए सभी को हैरान कर दिया। भारतीय बॉक्सर नीरज गोयत ने इस मुकाबले को लेकर पॉल के साथ बड़ी शर्त लगाई थी। नीरज का मानना था कि टायसन बॉक्सिंग मैच में जेक को हरा देंगे। यही कारण है कि उन्होंने माइक की जीत पर 1 मिलियन डॉलर यानी की करीब 8 करोड़ 40 लाख रुपये का अपना घर दांव पर लगा दिया था। जिसके बाद माइक टायसन हार गए हैं।

सहवाग से मतभेद के बाद पंजाब किंग्स से अलग हुए थे मै सवेल

मुम्बई (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में पंजाब किंग्स के लिए खेलते हुए कई रिकॉर्ड बनाए हैं। मैक्सवेल पंजाब किंग्स के कप्तान भी रहे थे पर मेंटोर वीरन्द्र सहवाग से मतभेद के बाद उन्हें टीम छोड दी। वह 2014 में किंग्स इलेवन पंजाब में शामिल हुए थे। उनकी टीम तब फाइनल में पहुंची थी पर वहां कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) से हार गयी गई। मैक्सवेल ने इस आईपीएल में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 552 रन बनाए थे। पंजाब के साथ अपने अपने सफर को याद करते हुए मैक्सवेल ने कहा कि हम उस समय अंतिम ओवर में हार गए थे। इस किकेटर ने कहा कि आपका सफर कितना भी अच्छा क्यों न हो पर ट्रॉफी के बिना सब बेकार है। साल 2014 के बाद पंजाब का प्रदर्शन गिर गया और वह अंक तालिका में आखिरी स्थानों पर रही। मैक्सवेल ने इसको लेकर कहा कि तब टीम के लिए कठिन समय था और एक युवा खिलाड़ी के रूप में उनके लिए इसे स्वीकार करना मुश्किल रहा था। 2017 में मैक्सवेल की एक बार फिर पंजाब टीम में वापसी हुई। तब सहवाग टीम मेंटर बन गये थे। वहीं मैक्सवेल को कप्तानी मिली। मैक्सवेल ने कहा कि टीम बनते ही स्पष्ट हो गया था कि इसपर सहवाग का प्रभाव है। उन्होंने कोच जे अरुणकुमार के साथ मिलकर फैसले लेने की जिम्मेदारी ली, जिससे खिलाड़ियों और कोचों के बीच भ्रम पैदा हो गया। जिसका प्रभाव टीम पर पड़ा। मैक्सवेल ने कहा कि एक मुकाबले में इशांत शर्मा को आखिरी समय पर टीम में जगह दे दी गई जोकि निर्णय लेने में अव्यवस्था को दिखाता था। टीम पर सहवाग की पकड़ बढ़ती गई। जिससे उनके बीच मतभेद भी बढ़ने लगे। और निराशाजनक सीज़न के बाद मैक्सवेल और सहवाग के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया। मैक्सवेल के अनुसार सहवाग ने सार्वजनिक रूप से उनकी आलोचना की थी जो सही नहीं था। मैक्सवेल ने साझा किया कि यह अप्रिय था, खासकर जब मुझे लगा कि हम अच्छी शर्तों पर अलग हुए हैं। उस घटना के बाद दोनों ने फिर कभी बात नहीं की और मैक्सवेल ने फ्रेंचाइजी मालिकों को सूचित किया कि अगर सहवाग जारी रहेगा तो वह चले जाएंगे।

इस सप्ताह सोने-चांदी की कीमतों की तेज शुरुआत

सोने का भाव 74,550 रुपए, चांदी 89,150 रुपए के करीब

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस सप्ताह के पहले दिन सोमवार को सोने-चांदी के वायदा भाव में तेजी देखी जा रही है। आज दोनों के वायदा भाव तेजी के साथ खुले। सोने के वायदा भाव 74,550 रुपये के करीब, जबकि चांदी के वायदा भाव 89,150 रुपये के करीब कारोबार कर रहे थे। वैश्विक बाजार में भी सोने-चांदी की वायदा कीमतों में तेजी देखने को मिल रही है। सोने के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क दिसंबर कॉन्ट्रेक्ट 474 रुपये की तेजी के साथ 74,420 रुपये के भाव पर खुला। इस समय यह 616 रुपये की तेजी के साथ 74,562 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत भी तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क दिसंबर कॉन्ट्रेक्ट 779 रुपये की तेजी के साथ 89,200 रुपये पर खुला। इस समय यह 739 रुपये की तेजी के साथ 89,160 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। वैश्विक बाजार में सोने-चांदी के वायदा भाव में तेजी देखने को मिल रही है।

कॉमेक्स पर सोना 2,571.50 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 2,570.10 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 28.10 डॉलर की तेजी के साथ 2,598.20 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 30.37 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव 30.43 डॉलर था। इस समय यह 0.30 डॉलर की तेजी के साथ 30.73 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

रुपया आठ पैसे बढ़कर 84.38 डॉलर पर

अमेरिकी डॉलर के मजबूती और विदेशी पूंजी की निकासी के बावजूद भारतीय रुपया सोमवार को 84.38 प्रति डॉलर पहुंच गया। यह निम्नतम स्तर से ऊपर उठकर आठ पैसे की बढ़ोतरी दर्शाता है। विदेशी मुद्रा व्यापारियों ने बताया कि उचित तेल कीमतों में गिरावट के कारण मुद्रा में सुधार आया। अंतरराष्ट्रीय बाजार में रुपया 84.42 प्रति डॉलर पर खुला और शुरुआती सौदों के बाद 84.38 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। इस बढ़ोतरी के बावजूद रुपया गुरुवार को 84.46 पर बंद हुआ था। वहीं अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 प्रतिशत की बढ़त के साथ 106.68 पर रुका।

भारतीय टीम को हराने का है अच्छा अवसर : ब्रैंडन जूलियन

मेलबर्न (एजेंसी)। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ब्रैंडन जूलियन ने कहा है कि इस बार मेजबान टीम के पास बॉर्डर गावस्कार सीरीज में भारतीय टीम को हराने का अच्छा अवसर है। जूलियन के अनुसार भारतीय टीम के प्रमुख बल्लेबाज कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली पिछले काफी समय से फार्म में नहीं हैं। इसके अलावा मध्यक्रम भी कमजोर है। जिसका लाभ हमारी टीम दबाव बनाकर उठा सकती है। न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज खराब प्रदर्शन से भी भारतीय टीम पर मनोवैज्ञानिक दबाव रहेगा। कोच गौतम गंभीर बाहर हालांकि अपने खिलाड़ियों का बचाव करते हुए उन्हें पिछली सीरीज से उबरकर बेहतर प्रदर्शन को प्रेरित करने का प्रयास करेंगे पर ये उनके लिए आसान नहीं रहेगा। मुझे लगता है कि ऑस्ट्रेलियाई टीम उन्हें पर्थ में हरा देगी। हमने उनके खिलाफ पिचली चार सीरीज में से कोई भी सीरीज नहीं जीती है इसलिए इस बार हम हिसाब बराकर कर सकते हैं। जूलियन ने साथ ही कहा कि भारतीय टीम बल्लेबाजी क्रम में संघर्ष कर रही है क्योंकि शुभमन गिल और केएल राहुल चोटिल हैं। इसलिए मुझे लगता है कि हम उन्हें पहले टेस्ट मैच में 4 दिनों में हरा देंगे। आपको शुरू में ही उन पर दबाव बनाना होगा और आपको आक्रामक होना होगा। मुझे लगता है कि भारत के पास अनुभव है, उनके पास सबकुछ है पर न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज के बाद उनका मनोबल घटा है जिसका लाभ हमें मिलेगा। वे पर्थ में लगातार चौथा मैच हार सकते हैं, फिर वे गुलाबी गेंद से टेस्ट मैच खेलने जाएंगे, जो पहले भी उनके लिए परेशानी का सबब था और फिर आप गाबा जाएंगे। इसलिए ये हमारे लिए भारत को हराने का आदर्श समय है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे बहुत दबाव के साथ मैदान में उतरेंगे।

विराट को जल्दी आउट करने की रणनीति बनायें : ग्लेन मैकग्रा

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई टीम के पूर्व तेज गेंदबाज ग्लेन मैकग्रा ने कहा है कि बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली को जल्दी आउट करने की रणनीति बनायी जानी चाहिये। मैकग्रा ने कहा कि विराट पर भारतीय बल्लेबाजी काफी ज्यादा आधारित रहती है इसलिए अगर वह पेवेलियन लौट गये तो टीम दबाव में आ जाएगी। मैकग्रा ने कहा कि ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के पास इतनी क्षमता है कि वह विराट को निशाना बना सके। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी की शुरुआत 22 नवंबर से पर्थ में होगी। भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछली चार टेस्ट श्रृंखला जीती हैं जिनमें से दो ऑस्ट्रेलिया में खेली गई हैं। टीम इंडिया को हाल में ही में अपनी घरेलू धरती पर न्यूजीलैंड के खिलाफ 0-3 से करारी हार का सामना करना पड़ा है जिससे वह दबाव में है। मैकग्रा ने कहा, ''इसमें कोई संदेह नहीं है कि न्यूजीलैंड के खिलाफ 0-3 की हार के बाद, आपके पास खुद को साबित करने के लिए बहुत क्षमता है।'' उन्होंने कहा, ''इसलिए उन पर दबाव डालें और देखें कि वे इसके लिए तैयार हैं या नहीं।'' उन्होंने कहा कि भारत की बल्लेबाजी के मुख्य आधार रहे कोहली पिछले कुछ समय से टेस्ट क्रिकेट में खराब फॉर्म से जूझ रहे हैं जिसका लाभ भी टीम को उठाना चाहिये। इस साल उन्होंने जो छह मैच खेले हैं उनमें उनका औसत मात्र 22.72 रहा है। चोटिल शुभमन गिल पहले टेस्ट से बाहर हैं और कप्तान रोहित शर्मा का खेलना भी संदिग्ध है और ऐसे में कोहली बल्लेबाजी क्रम का नेतृत्व करने को लेकर पहले ही दबाव में रहेंगे। कोहली ऑस्ट्रेलिया में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहेंगे। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के चार दौरों में 54.08 के प्रभावशाली औसत से रन बनाए हैं। मैकग्रा ने चेतावनी दी कि कोहली को आक्रामक तरीके से निशाना बनाने से वह जुनूनी हो सकते हैं इसलिए इस मामले में सावधानी रखें। मैकग्रा ने कहा, ''मुझे लगता है कि वह थोड़ा दबाव में है और अगर वह शुरू में कुछ कम स्कोर करता है तो वह वास्तव में इसे महसूस करेगा। जिससे ऑस्ट्रेलिया का काम आसान हो जाएगा।

शेयर बाजार मे रही गिरावट

सेंसेक्स 511 अंक गिरकर 77,058 पर, निफ्टी 23,370 पर

मुंबई (एजेंसी)। विदेशी फंडों की लगातार निकासी, आईटी शेयरों में बिकवाली और अमेरिकी बाजारों से कमजोर संकेत के कारण सोमवार को शुरुआती कारोबार में इक्विटी बेंचमार्क सूचकांक फिर फिसल गए। सुबह की शुरुआत में बीएसई सेंसेक्स 511 अंक गिरकर 77,058 पर कारोबार कर रहा था, जबकि निफ्टी 50 162 अंक गिरकर 23,370 पर था। वहीं पिछले सप्ताह बीएसई बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स में 1,906.01 अंक की गिरावट आई। शुक्रवार को गुरु नानक जयंती के अवसर पर शेयर बाजार बंद रहे। बीएसई बेंचमार्क इंडेक्स अपने ऑलटाइम हाई से 8,397.94 अंक की भारी गिरावट के साथ बंद हुआ और निफ्टी भी रिकॉर्ड हाई से 2,744.65 अंक नीचे आ गया। दूसरी तिमाही के नतीजों का सीजन अब लगभग समाप्त होने की कगार पर है। आज गोदावरी लिमिटेड, बायोरिफाइनरीज लिमिटेड, सम्यक इंटरनेशनल वलेचा इंजीनियरिंग लिमिटेड और वारी एनर्जीज लिमिटेड अपनी सितंबर तिमाही के नतीजों का ऐलान करेंगी। आईपीओ लॉन्च होने के बाद गोदावरी बायोरिफाइनरीज और वारी एनर्जीज के लिए यह पहला तिमाही रिजल्ट होगा। इसके अलावा, निवेशक आज हीरो मोटोकॉर्प, ग्रासिम इंडस्ट्रीज और नाज़ारा टेक जैसी कंपनियों के दूसरी तिमाही के नतीजों पर प्रतिक्रिया देंगे। मैनबोर्ड सेगमेंट से ज़िंका लॉजिस्टिक्स और एसएमई सेगमेंट से ओनिक्स बायोटेक आईपीओ पर दांव लगाने का आज अंतिम दिन है। इसके अलावा नीलम लिनेन एंड गारमेंट्स का आईपीओ पर बाजार में डेब्यू करेगा। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव के चलते 20 नवंबर बुधवार को भारतीय शेयर बाजार ने छुट्टी की घोषणा की है। इस दिन नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में कोई ट्रेडिंग नहीं होगी।

चोरहटा थाना क्षेत्र के दुआरी गांव में शादी समारोह के दौरान हुई फायरिंग

दूल्हे के जीजा और दोस्त ने दुल्हन के दो भाइयों पर दागी गोली, बालबाल बचा टीआई भाई, दूसरा भाई हुआ घायल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। चोरहटा थाना क्षेत्र के दुआरी गांव में रविवार की देर रात शादी समारोह के दौरान हुई फायरिंग की घटना से क्षेत्र में सनाका खिच गया। गोलीबारी की घटना में दुल्हन के बड़े भाई थाना प्रभारी सहित छोटे भाई पर दूल्हे की जीजा ने देशी कट्टे से फायरिंग कर दी. कट्टे से जब गोली फायर नही हुई तो उसके दोस्त ने जेब से पिस्टल निकाली और दुल्हन के छोटे भाई पर दाग दी। दो गोली लगने से युवक गंभीर रूप से घायल हो गया घटना के बाद दुल्हन का जीजा और उसका दोस्त मौके से फरार हो गए. वारदात से हड़कंप की स्थिति निर्मित हो गई. मौके पर मौजूद लोगो ने पुलिस को सूचना दे दी. जिसके बाद घायल को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया जहां पर उसका इलाज किया जा रहा है।

वरमाला के दौरान दुल्हन के भाई पर दूल्हे के जीजा ने दागी गोली: दरअसल थाना सतना जिले के रामपुर बघेलान निवासी राम सिंह बालाघाट जिले में स्थित किसी थाने में थाना प्रभारी के पद पर पदस्थ हैं. थाना प्रभारी राम सिंह की बहन की शादी रीवा में तय हुई थी. बीते रविवार की रात रीवा के चोराहटा थाना क्षेत्र स्थित दुआरी गांव के एक बरात घर में शादी समारोह का आयोजन चल रहा था शादी के रस्मे चल रही थी तभी वरमाला के दौरान पार्किंग स्थल से गोलियों की तड़तड़ाहट की आवाज सुनकर बराती और घराती पक्ष के लोग सन्न रह गए।

थाना प्रभारी राम सिंह के बहन की थी शादी: दरअसल दुल्हन के बड़े भाई थाना प्रभारी राम सिंह और उनका परिवार शादी समरोह के कार्यक्रम में व्यस्त था. राम सिंह की फोर्ड कार बाहर बरात घर के पार्किंग में खड़ी थी इसी दौरान एक काले की स्कार्पियो वाहन में सवार कुछ लोगो ने राम सिंह की गाड़ी ठोकर मार दी. राम सिंह के किसी परिवार के एक सदस्य घटना का विडियो अपने मोबाईल कैमरे में कैद कर लिया. स्कार्पियो स्वर लोगो ने विडियो बनाने वाले शख्स के कनपटी पर कट्टा तानकर जबरन उससे विडियो डिलीट करवाया. इसी दौरान किसी ने घटनाक्रम की सूचना राम सिंह को दी. राम सिंह अपने भाईयों के साथ मौके पर पहुंचे जिसके बाद विवाद और बढ़ गया.

पुलिस अफसर के भाई को लगी गोली अस्पताल में चल रहा ईलाज: गोलीबारी की घटना को लेकर थाना प्रभारी ने आरोप लगाते हुए बताया की विवाद के दौरान स्कार्पियो सवार दूल्हे की जीजा और उसके दोस्त ने राम सिंह के साथ गाली गलौच करनी शुरू कर दी इसी दौरान मना करने पर थाना प्रभारी राम सिंह के ऊपर उसने कट्टे से फायरिंग कर दी जब कट्टे से गोली नही निकली तो वहां पर मौजूद दूल्हे के जीजा के दोस्त ने जेब से पिस्टल निकाली और राम सिंह के भाई पर एक बाद एक दो बार फायरिंग कर दी पिस्टल से निकाली गोली राम सिंह के भाई विक्रम सिंह के कूल्हे और जांघ में जा लगी गोली लगने से वह घायल हो गया. घायल को तत्काल अस्पताल ले जाया गया जहां पर उसका इलाज किया जा रहा. घटना के बाद दूल्हे का जीजा दीपक सिंह और उसके साथी मौके से फरार हो गए।

एसपी ने कहा मामले की जांच में जुटी पुलिस: मामले पर एसपी विवेक सिंह ने बताया की शादी समारोह के दौरान गोली चलने के घटना हुइ थी दुल्हन के भाई राम सिंह पुलिस अफसर का गाड़ी में ठोकर लगने को लेकर दूल्हे के जीजा से विवाद हुआ था गोली चलने के घटना हुई थी जिसमें राम सिंह के भाई को दो गोली लगी थी. घटना के बाद से आरोपी फरार है मामला पंजीबद्ध करते हुए उनकी तलाश की जा रही है।

समाधान ऑनलाइन की शिकायतें लंबित रहने पर कलेक्टर नाराज

एस.डी.एम. के वेतन आहरण पर लगाई रोक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने टीएल बैठक में समाधान ऑनलाइन, सीएम हेल्पलाइन, जनसुनवाई सहित विभिन्न फोरम में प्राप्त हुई शिकायतों के निराकरण की विभागवार व अनुभागवार समीक्षा की। समाधान ऑनलाइन की राजस्व से संबंधित शिकायतें लंबित रहने पर उन्होंने कड़ी नाराजगी व्यक्त की तथा त्योंथर, मनगवां, सिरमौर, सेमरिया व जवा के एसडीएम के वेतन आहरण पर आगामी आदेश तक रोक लगाने के निर्देश दिये।

कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिये कि प्राप्त सभी स्तर की शिकायतों को संतुष्टिपूर्वक निराकृत कराकर पोर्टल में दर्ज करायें तथा कोई भी विभाग सी व डी श्रेणी में न रहे। उन्होंने अक्टूबर माह की मांगे आधारित शिकायतों को निराकृत कराने तथा सीएम निवास तथा सीएम मानीटरिंग की शिकायतों को निराकृत कराने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने कहा कि जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों की भी विभागवार समीक्षा की जायेगी अतः विभागीय अधिकारी प्राप्त आवेदनों का समय सीमा में निराकरण किया जाना सुनिश्चित करायें। बैठक में कलेक्टर ने निर्देश दिये कि विभागीय अधिकारी स्वतः टीएल में उपस्थित रहे आवश्यक होने पर अनुमति लेकर ही प्रतिनिधि भेंजे। उन्होंने विभिन्न विभागों के कार्यालयों में सोलर एनर्जी पैनल लगाये जाने हेतु जानकारी प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। इस दौरान अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी सहित समस्त एसडीएम, विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

हमारा शौचालय हमारा सम्मान अभियान आज से होगा संचालित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। स्वच्छ भारत मिशन के तहत हमारा शौचालय हमारा सम्मान अभियान 19 नवम्बर विश्व शौचालय दिवस से आरंभ होकर 10 दिसंबर तक संचालित होगा। अभियान अवधि में व्यक्तिगत, संस्थागत तथा सामुदायिक स्वच्छता परिसर को संवारने व रंगरोशन कर साफ-सुथरा करने का अभियान संचालित किया जायेगा।

कलेक्टर प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में आयोजित अर्न्तविभागीय बैठक में निर्देश दिये गये कि गैर क्रियाशील शौचालयों की पहचानकर उनको क्रियाशील बनाये साथ ही सर्वश्रेष्ठ स्वच्छ शौचालय के हितग्राही को पुरस्कृत करें। स्वच्छता कार्यकर्ताओं को पुरस्कृत करने के साथ ही लोगों में व्यवहार परिवर्तन करने व शौचालय के उपयोग के लिये जागरूक करने का भी अभियान इस दौरान संचालित होगा। कलेक्टर ने निर्देश दिये कि जनपद स्तर पर बैठक कर अभियान को क्रियान्वित करायें। व्यक्तिगत शौचालयों को साफ-सुथरा कर रंगरोगन कराते हुए इसके उपयोग व समुदाय में जागरूकता अभियान चलाकर निर्मित शौचालयों की आईएमआईएस में प्रविष्टि कराया जाना सुनिश्चित करें। इस दौरान बताया गया कि ग्राम पंचायत स्तर पर दो सर्वश्रेष्ठ शौचालयों को पुरस्कृत किया जायेगा। इसी प्रकार जिला स्तर पर ग्राम पंचायतों से भेजी गई सूची में से सर्वश्रेष्ठ पंचायत व सर्वश्रेष्ठ ब्लाक को भी पुरस्कार दिया जायेगा। बैठक में अपर कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सपना त्रिपाठी सहित समस्त एसडीएम, जनपद के सीईओ व विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

निर्माण कार्यों के लिए समन्वय से भूमि उपलब्ध कराएं

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में निर्माण कार्यों के लिए वन भूमि उपलब्ध कराने संबंधी प्रस्तावों की समीक्षा की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कमिश्नर बीएस जामोद ने कहा कि संभाग के सभी जिलों में अधोसंरचना विकास के कार्य बड़ी संख्या में किए जा रहे हैं। इन कार्यों के लिए जहाँ वन भूमि की आवश्यकता है वहाँ के प्रकरण संबंधित विभाग तैयार करके वन विभाग के सहयोग से अनुमति प्राप्त करे। निर्माण कार्यों के लिए एक हेक्टेयर से कम भूमि के लिए प्रस्ताव वनाधिकार अधिनियम के तहत प्रस्तुत करें। बड़ी परियोजनाओं में यदि एक हेक्टेयर से अधिक वन भूमि की आवश्यकता है तो उतनी ही भूमि की प्रतिपूर्ति करते हुए प्रस्ताव वन विभाग के परिवेश पोर्टल में ऑनलाइन दर्ज कराएं। संबंधित विभाग तथा वन विभाग के अधिकारी प्रकरण के संबंध में समन्वय से प्रयास करके इसका निराकरण कराएं।

बैठक में कमिश्नर ने कहा कि निर्माण कार्यों के लिए यदि वन भूमि की आवश्यकता है तो उसके बराबर राजस्व भूमि वन विभाग को हस्तांतरित करने का परिवेश पोर्टल के दर्ज प्रकरण में उल्लेख करें। यदि एक जिले में पर्याप्त भूमि नहीं है तो संभाग के अन्य जिलों के कलेक्टर से संपर्क करके वन भूमि के प्रतिपूर्ति के प्रयास करें। जल निगम की सभी परियोजनाओं के लिए आवेदन वन विभाग में दर्ज किए जा चुके हैं। इन सभी 17 प्रकरणों में पाइपलाइन तथा टंकी निर्माण के लिए वन विभाग तय समय सीमा में अनुमति प्रदान करे। भू अर्जन के सभी प्रकरणों को आपसी सहयोग और समन्वय से निराकृत करें जिससे निर्माण कार्य तय समय सीमा में पूरे हो सके।

बैठक में जल संसाधन विभाग, पूर्वी क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी, लोक निर्माण विभाग, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, सेतु विकास निगम, पीआईयू, ग्रामीण यात्रिकी सेवा विभाग तथा मध्यप्रदेश प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के निर्माण कार्यों के लिए वन विभाग को भेजे गए प्रस्तावों की समीक्षा की गई। कमिश्नर ने कहा कि भूमि से संबंधित सभी प्रस्ताव निर्माण कार्यों के अधिकारी केवल कलेक्टर को प्रस्तुत करें।

खड्डा टोल प्लाजा बना अवैध कमाई का गढ़, केसीसी कंपनी के टोल की मनमानी वसूली

ओवरलोड वाहनों से बिना कांटा कराए ही ली जा रही 750 की राशि पिछले छह महीनों में शासन को लगी करोड़ों के कर की चपत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बिछिया थाना क्षेत्र स्थित खड्डा गांव में संचालित राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएचएआई) के टोल प्लाजा में इन दिनों टोल संचालित करने वाली कंपनी के द्वारा मनमाना टैक्स वसूल किया जा रहा है जिसके चलते आम लोगों को लगातार परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है वहीं शासन को भी इससे करोड़ों के कर की चपत लग रही है मगर फिर भी विभाग के लोग कंपनी के द्वारा मनमाना तरीके से की जा रही टैक्स वसूली पर कुछ भी कहने से कतराते रहते हैं।

दरअसल रीवा से सीधी की ओर जाने वाली सड़क में खड्डा गांव के समीप केसीसी कंपनी के द्वारा टोल संचालित किया जा रहा है जो विगत 6 महीनों से सरकार के लिए कर वसूली का काम कर रही है परंतु कर वसूली का काम करते हुए कंपनी ने नियम के विपरीत वाहनों से मनमाना टैक्स वसूलना शुरू कर दिया जिससे अब लोग लगातार परेशान हो रहे हैं।

बताया जा रहा है कि केसीसी कंपनी के द्वारा संचालित किए जा रहे खड्डा टोल प्लाजा ओवर लोड होकर निकल रही हाईवा वाहनों से अपने तरीके की टैक्स वसूली की जाती है जिसकी बिलिंग रशीद पर्ची भी कंपनी के द्वारा हाईवा वाहनों को नहीं दिया जाता तथा बिना कांटा कराए ही टोल संचालक के द्वारा ओवर लोड वाहनों से वसूली की जाती है।

जानकारी के मुताबिक इस टोल प्लाजा से निकलने वाली हाईवा वाहनों की अलग अलग रेट सूची तैयार की गई है जो नियमों से हटकर टोल का संचालन करने वाले कर्मचारियों के द्वारा किया गया है जिसमे कर्मचारियों के द्वारा कर की चोरी करने का तरीका निकाला गया है तथा बिना पर्ची के ही हाईवा वाहनों से ओवर लोड की 750 रुपए की राशि वसूल कर ली जाती है जिससे यह पैसा सीधा कर्मचारियों के जेब में जाता है।

इसके साथ ही ओवर लोडिंग वाहन पर कांटा कराने के बाद ओवरलोड के हिसाब से जो राशि कलेक्ट करने का नियम है उसे ताक पर रखकर प्लाजा संचालन कर रहे कर्मचारी फास्टैग की सहायता से ही वाहनों को छोड़ दिया जाता है जबकि ओवरलोड वाहनों के लिए फास्टैग से निकलने का कोई नियम नहीं है।

मुझे इस मामले की ऐसी कोई जानकारी नहीं है कि बिना नियम के ही किसी तरह का टैक्स टोल संचालक वसूल रहे हैं। शासन की गाइडलाइन के अनुसार फ़िक्स रेट तय किया गया है प्रत्येक ओवरलोड वाहनों के लिए उसके आधार पर ही टैक्स की वसूली होनी चाहिए। खड्डा टोल प्लाजा में अगर नियम विपरीत कर की वसूली की जा रही है तो उनसे जानकारी ली जाएगी।

आनंद कुमार, टोल अधिकारी (एनएचएआई)

तीर्थदर्शन ट्रेन 21 नवम्बर को शाम 7 बजे द्वारिका के लिए होगी रवाना

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री तीर्थदर्शन योजना के तहत 60 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को किसी एक तीर्थ स्थान की नि:शुल्क तीर्थयात्रा कराई जाती है। यात्रा के दौरान वरिष्ठ नागरिक के भोजन, नाश्ते, पानी तथा ठहरने की नि:शुल्क व्यवस्था की जाती है। तीर्थदर्शन योजना के तहत रीवा के चुने हुए तीर्थयात्रियों को लेकर विशेष ट्रेन 21 नवम्बर को शाम 7 बजे रीवा रेलवे स्टेशन से द्वारिका के लिए रवाना होगी। इस संबंध में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी ने बताया कि तीर्थयात्रा के लिए सभी विकासखण्डों और नगरीय निकायों से प्राप्त आवेदनों के आधार पर तीर्थयात्रियों का चयन किया गया है। पात्रता के अनुसार वरिष्ठ नागरिकों को सहायक की भी सुविधा दी गई है। सभी तीर्थयात्रियों को नगरीय निकाय एवं ग्राम पंचायत के माध्यम से यात्रा की सूचना दी जा रही है। तीर्थयात्री अपने साथ आधार कार्ड, आवश्यक दवायें, दैनिक उपयोग के कपड़े, मौसम के अनुसार कपड़े अवश्य साथ रखें। ट्रेन रवाना होने से एक घंटा पहले रेलवे स्टेशन पहुंचकर अपने परिचय पत्र और टिकट प्राप्त कर लें। यात्रियों की सुविधा के लिए यात्रा के दौरान दो शासकीय सेवक भी ट्रेन में तैनात रहेंगे। तीर्थदर्शन ट्रेन 23 नवम्बर को सुबह 8.30 बजे द्वारिका पहुंचेगी। ट्रेन 24 नवम्बर को रात 8 बजे द्वारिका से प्रस्थान कर 26 नवम्बर को सुबह 9 बजे रीवा पहुंचेगी।

विकासखण्डों में होंगी बैंकर्स सलाहकार समिति की बैठकें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के सभी विकासखण्डों में खण्ड स्तरीय बैंकर्स सलाहकार समिति की बैठकें आयोजित की जा रही हैं। इस संबंध में अग्रणी बैंक प्रबंधक जगमोहन कुमार ने बताया कि रायपुर कर्चुलियान में 19 नवम्बर, गंगेव में 20 नवम्बर, सिरमौर में 21 नवम्बर, त्योंथर में 22 नवम्बर, रीवा में 25 नवम्बर तथा जवा में 27 नवम्बर को बैठकें आयोजित की जा रही हैं। सभी बैठकें जनपद पंचायत कार्यालय सभागार में आयोजित की जा रही हैं। इन बैठकों में केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित हितग्राहीमूलक योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की जाएगी। बैठक में स्वामित्व योजना, मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री स्टैण्डअप इंडिया योजना, जनधन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योति योजना, फसल बीमा योजना तथा अटल पेंशन योजना की समीक्षा की जाएगी।

तीन स्टार को घर बिठाकर, 2 स्टारों के भरोसे सौंप दी गई थाने की कमान

11 उपनिरीक्षक जी रहे थाने की लाइफ, लाइन में सात निरीक्षक

2 स्टार की लिस्ट में शहर के 7 में से 3 थाने शामिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले भर में इन दिनों निरीक्षकों के होते हुए दर्जनभर थाने उपनिरीक्षकों के भरोसे पर संचालित हो रहे हैं जिसकी वजह से लगातार हो रही आपराधिक घटनाओं में शिकंजा कसने पर पुलिस प्रशासन नाकामयाब ही दिखाई दे रहा। वहीं रीवा शहर में तीन बड़े बड़े ऐसे थाने हैं जहां निरीक्षकों की पदस्थापना होनी चाहिए मगर यह थाने उपनिरीक्षकों के दम पर ही चल रहे हैं तथा उपनिरीक्षकों की अनुभव कमी उनके कार्यों के आड़े आ जाती है और वह अपराध पर अंकुश लगा पाने में सक्षमता नहीं दिखा पाते। रीवा शहर की हम बात करें तो सिटी कोतवाली थाना, अमहिया थाना और बिछिया थाना यह तीनों थाने निरीक्षक स्तर के थाने जहां पर इन दिनों लगातार अपराधिक ग्राफ भी बढ़ता ही जा रहा है परंतु फिर भी वरिष्ठ अधिकारी इन थानों पर निरीक्षकों की पदस्थापना नहीं कर पा रहे हैं। इसके अलावा शहर से सटे हुए गुढ़ थाने में भी पुलिस के अधिकारियों द्वारा निरीक्षक की पदस्थापना नहीं की गई है जबकि हालही में इसी इलाके पर देश को हिला देने वाली दुष्कृत्य की घटना सामने आई थी। वहीं ग्रामीण इलाके की बात की जाए सगरा, बैकुंठपुर, जवा, अतरैला, डभौरा और जनेह थाना जिले के ऐसे थाने हैं जहां उपनिरीक्षक ही थाने के प्रभारी बने बैठे हैं इसके साथ ही हाल ही से रीवा शहर में हर रोज गोलीबारी की घटनाएं भी हो रही हैं परंतु पुलिस की टीम इनके रोकथाम पर भी कोई ठोस कदम नहीं उठा पाई है। वहीं बात की जाए नशीले मादक पदार्थों के विक्रय की तो शायद ही जिले में ऐसे कोई थाने होंगे जहां नशीली सिरप कोरेक्स के साथ ही गांजा और अन्य नशीली सामग्रियों का विक्रय न होता हो जबकि इस तरह की सामग्रियां का वितरण बड़ा अपराध माना जाता है फिर भी पुलिस इस पर कार्यवाही नहीं कर पाती है क्योंकि इसके पीछे की सबसे बड़ी वजह प्रभारियों की अनुभव कमी है जिसके कारण वह घटनाओं को बारीकी से नहीं समझ पाते ऐसे में निरीक्षकों की पदस्थापना जरूरी हो जाती है

5 प्रमुख थाने जिसमें जरूरी है निरीक्षकों की पदस्थापना : चाकघाट, गुढ़, अमहिया, सिटी कोतवाली, और बिछिया यह ऐसे बड़े थाने हैं जहां पर निरीक्षकों की पदस्थापना जरूरी है क्योंकि इनमें से 3 थाने रीवा शहर में आते हैं जहां आपराधिक घटनाओं का होना चाकघाट थाने में पदस्थ निरीक्षक थाना प्रभारी का भी स्थानांतरण कर दिया गया है जिसकी वजह से उत्तर प्रदेश की सीमा से सटा हुआ चाकघाट थाना सबसे प्रमुख थाना है जहां निरीक्षक की नियुक्ति नहीं हुई है।

दरअसल जिले भर में लगातार बढ़ रहे आपराधिक घटनाओं पर शिकंजा कसने में पुलिस प्रशासन अक्सर नाकामयाब ही रहा है जिसकी वजह से आए दिन यहां चोरी, लुट तथा हत्या जैसी घटनाएं आम हो चुकी हैं वहीं बीते कई दिनों अधिक मात्रा में संभव है वहीं उत्तर प्रदेश की सीमा से सटे होने के कारण चाकघाट थाने में भी निरीक्षक की नियुक्ति अनिवार्य हो जाती है इसके अलावा गुढ़ थाना जो ग्रामीण क्षेत्रों का सबसे बड़ा भूभाग एकत्रित किया हुआ है तथा सीधी जिले की सीमा से भी सटा हुआ है ऐसे में वहां पर भी निरीक्षक की नियुक्ति जरूरी हो जाती है।

लाइन में आराम फरमा रहे निरीक्षकों (टीआई) की सूची: जेपी ठाकुर, संतोष पंद्रे, उषा सिंह, एमएल वर्मा, अतुल त्रिपाठी, अजय खोबरागड़े व एच एस तिवारी निरीक्षक स्तर के यह साथ टी आई कर्मचारी अभी भी पुलिस लाइन में अपनी सेवाएं दे रहे जिनकी जरूरत बड़े बड़े थानों को है परंतु न तो वरिष्ठ अधिकारी और ना ही गृह विभाग इन निरीक्षकों को किसी भी तरह की जिम्मेदारी सौंप रहा है जिसकी वजह से यह निरीक्षक आराम में है और उनकी जिम्मेदारी को संभालने का काम उपनिरीक्षक स्तर के कर्मचारी कर रहे हैं।

6 ट्रक बिना परमिट जप्त, दो लाख के अधिक मोटर यानकर भी बकाया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। परिवहन विभाग रीवा द्वारा सोमवार को परिवहन सुरक्षा स्क्वाड एवं आरटीओ चेक पॉइंट रीवा 2 में वाहन चेकिंग के दौरान 6 ट्रक बिना दस्तावेज एवं बिना परमिट के पाये गये जिनमे मध्यप्रदेश परिवहन विभाग का 2 लाख रुपये का मोटरयान कर भी बकाया पाया गया। जाँच में तीन ट्रक सोहागी टोल के समीप पाये गये जिनके दो ट्रक सोहागी थाना एवं एक ट्रक पुराने परिवहन चेकपोस्ट में सुरक्षार्थ खड़ा कराया गया।यह ट्रक उत्तरप्रदेश कि तरफ़ से मध्यप्रदेश की सीमा में बिना दस्तावेज चलाये जा रहे थे। इसके अलावा परिवहन सुरक्षा स्क्वाड रीवा में भी जाँच के दौरान तीन ट्रक बिना दस्तावेज खनिज का परिवहन करते हुए पाये गये जिन्हें जप्त कर परिवहन कार्यालय रीवा में सुरक्षार्थ खड़ा कराया गया इन ट्रकों में मोटरियान कर भी बकाया पाया गया।यह कार्यवाही परिवहन आयुक्त महोदय के निर्देशन में परिवहन सुरक्षा स्कवाड प्रभारी रवि मिश्रा के द्वारा की गई आज की जाच कार्यवाही में 67000 रुपये का राजस्व अर्जित किया गया है। ऐसे वाहन जो नियम विरुद्ध संचालित हो रहे है और अवैध खनिज का परिवहन करते है तथा क्षमता से अधिक वाहनों पर माल का परिवहन करते है।उन पर चालानी कार्यवाही निरंतर जारी रहेगी और जांच में बाधा उत्पन्न करने वालों पर होगी वैधानिक कार्यवाही।

एक साल में उद्यानिकी फसलों में हुआ 12583 हेक्टेयर क्षेत्र विस्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले में अनाज, दलहन और तिलहन की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। इनके साथ-साथ उद्यानिकी फसलों का भी बड़े क्षेत्र में विस्तार है। जिले में लगभग 10 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में खेती की जा रही है। इनमें से एक लाख 53 हजार 303 हेक्टेयर में उद्यानिकी फसलें ली जा रही है। इनमें मुख्य रूप से आम, नींबू, अमरूद, आंवला जैसे फलों का क्षेत्र शामिल है। इसके साथ-साथ आलू, टमाटर, प्याज, मिर्च, कद्दू वर्गीय सब्जियाँ भी बड़े क्षेत्र में ली जा रही हैं। औषधीय पौधों की खेती अैर फूलों की खेती की तरफ भी किसानों की रूचि तेजी से बढ़ी है। एक वर्ष में रीवा जिले में उद्यानिकी फसलों में 12583.75 हेक्टेयर क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।